राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अकं :211 रांची (झारखंड),बुधवार 30 अप्रैल 2025 पेज - 08 मूल्य: 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए भाजपा ने भारतीय सेना का जताया आभार

एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा ने आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए भारतीय सुरक्षा बलों को धन्यवाद दिया है। भाजपा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर 100 फीसदी सफल रहा। जितने हमारे जांबाज पायलट राफेल के साथ गए थे, वह सभी आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करके आए, लेकिन किसी नागरिक को नहीं मारा। भाजपा मुख्यालय में सोमवार को हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में पार्टी प्रवक्ता ओर सांसद संबित पात्रा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर 100 प्रतिशत सफल रहा। जितने हमारे जांबाज पायलट गए थे राफेल के साथ, उतने लौटकर आए। सभी आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करके आए, लेकिन किसी नागरिक को नुकसान नहीं पहुंचाया। इस सिंदूर ऑपरेशन के तहत सेना ने पाकिस्तान के नौ आतंकी शिविरों को नष्ट कर दिया, जिनमें से पांच पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू और कश्मीर (पीओके) में और चार पाकिस्तान में थे। उन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा में सुरक्षा बलों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सेना ने अदम्य साहस का परिचय दिया है। संबित पात्रा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर में लश्कर-ए-तैयबा का आतंकी मुजस्सर उर्फ अबू जिंदाल मारा गया। इसके जनाजे में पाकिस्तान के आर्मी चीफ और आर्मी अधिकारी, पंजाब सीएम मरियम

नवाज शामिल हुईं। इससे साबित होता है कि आतंकवाद और आतंक को बढ़वा देने वाले एक साथ काम करते हैं। दूसरा जैश-ए-मोहम्मद का आतंकी यूसुफ अजहर व हाफिज मुहम्मद जमील मारा गया। उन्होंने कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में पाकिस्तान द्वारा प्रशिक्षित आतंकियों ने 26 लोगों की नृशंस हत्या कर दी गई थी। तब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वादा किया था कि आतंकवाद के खिलाफ हमला होगा, हम पहलगाम के इस आतंकवादी हमले का बदला लेंगे। ये जो बदला होगा वो आतंकवादियों की कल्पना से परे होगा और जो बदला हमने लिया वो आतंकवादियों की सोच से परे था। उन्होंने कहा कि पानी और खून एक साथ नहीं बहेगा। 50 वर्षों तक जो संभव नहीं हुआ था, वो इस बार संभव हुआ। किसी भी युद्ध में सिंधु नदी के पानी को रोका नहीं गया था, ये असंभव काम इस बार संभव हुआ। अटारी बाघा बॉर्डर को बंद कर दिया गया। दोनों देशों के बीच कोई ट्रेड नहीं होगा और इसका खामियाजा पाकिस्तान की इकोनॉमी भुगतेगी। ऑपरेशन सिंदूर में सैन्य और गैर-सैन्य दोनों घटक शामिल हैं। गैर-सैन्य रणनीति के हिस्से के रूप में सिंधु जल संधि को खत्म करने के पाकिस्तान को काफी नुकसान होगा। क्योंकि पाकिस्तान की 80 प्रतिशत कृषि जल संसाधनों पर निर्भर करती है। जल प्रवाह को रोकने से पाकिस्तान की जीडीपी में संभावित रूप से एक-चौथाई की कमी आ सकती है। संबित पात्रा ने कहा कि पाकस्तान को अलग-थलग करने और आतंकवाद से निपटने के लिए आम सहमति बनाने के लिए पीएम मोदी ने 20 देशों के नेताओं से सीधे बातचीत की। खास बात यह है कि इन सभी देशों ने भारत के रुख का समर्थन किया। सऊदी अरब, यूएई, अमेरिका और यहां तक ??कि कई इस्लामिक देशों समेत प्रमुख देशों ने भारत के पक्ष में खुलकर खड़े हुए।

राष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ में हुए सड़क हादसे पर जताया दुख

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सोमवार को छत्तीसगढ़ में बलौदाबाजार-रायपुर मार्ग पर सारागंव के नजदीक हुए सड़क हादसे पर दुख जताया है। राष्ट्रपति ने एक्स पर पोस्ट किया, रायपुर, छत्तीसगढ़ में एक सड़क दुर्घटना में बच्चों एवं महिलाओं सहित कई लोगों की मृत्यु का समाचार अत्यंत दुखद है। मैं शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति गहन संवेदनाएं व्यक्त करती हूं और घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं।

आईईडी विस्फोट में एक जवान घायल

पश्चिम सिंहभूम। पश्चिमी सिंहभूम (चाईबासा) जिले के संवेदनशील सारंडा जंगल क्षेत्र में नक्सल विरोधी अभियान के दौरान सोमवार सुबह नक्सलियों ने सुरक्षा बलों को निशाना बनाते हुए इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) विस्फोट कर दिया। इस विस्फोट में एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया। जवान को एयरलिफ्ट कर बेहतर इलाक के लिए रांची लाया गया है यह घटना उस वक्त हुई जब सुरक्षाबलों का दस्ता जंगल के भीतर गश्त कर रहा था, तभी अचानक जमीन में दबाकर रखे गए आईईडी में विस्फोट हो गया। इस विस्फोट में एक जवान घायल हो गया, जिसे पहले प्राथमिक उपचार के लिए नजदीकी कैंप लाया गया और फिर वहां से बेहतर इलाक के लिए रांची स्थित एक अस्पताल में रेफर कर दिया गया है। घटना की पुष्टि कोल्हान के डीआईजी मनोज रतन चौथे ने भी की है। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में अतिरिक्त बल भेजे गए हैं और तलाशी अभियान को और तेज़ कर दिया गया है। सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके को घेर लिया है और नक्सलियों की तलाश जारी है।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों ने की कांग्रेस कार्यकर्ता की हत्या

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बीजापुर जिले के उसूर थाना क्षेत्र के ग्राम लिंगापुर में नक्सलियों ने कांग्रेस कार्यकर्ता और सोसाइटी संचालक नागा भंडारी की धारदार हथियार से हत्या कर दी। इस घटना से इलाके में दहशत व्याप्त है। हालांकि नक्सलियों ने छह माह के स्वयं के छद्म युद्ध विराम की घोषणा कर रखी है। इसके बावजूद वे आए दिन कोई न कोई वारदात कर रहे हैं। नक्सलियों ने इस खूनी वारदात को रविवार देर रात अंजाम दिया। नक्सलियों ने कांग्रेस कार्यकर्ता नागा भंडारी की उसके घर से कुछ ही दूरी पर धारदार हथियार से हत्या कर दी। नागा मारूडबाका सोसाइटी का संचालक भी था। इससे इलाके के लोगों में बहुत आक्रोश है। संचालक की हत्या की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की विवेचना शुरू कर दी है। गौरतलब है कि 24 अक्टूबर 2024 में मृतक नागा भंडारी के बड़े भाई तिरुपति भंडारी को ग्राम उसूर के पास दिनदहाड़े नक्सलियों ने हत्या कर दी थी।

राजस्थान के बॉर्डर इलाकों में सतर्कता बढ़ी, स्टेडियम को बम से उड़ाने की धमकी, एयरपोर्ट फिर से शुरू

जयपुर। राजस्थान के सीमावर्ती इलाकों में पूरी तरह सतर्कता बरती जा रही है। श्रीगंगानगर जिले और उसके चार उपखंडों में बॉर्डर से सटे तीन किलोमीटर क्षेत्र में कड़े प्रतिबंध लागू कर दिए गए हैं। अब शाम सात बजे से सुबह छह बजे तक इस क्षेत्र में लोगों की आवाजाही पूरी तरह बंद रहेगी। खेती के काम के लिए भी अधिकारियों से विशेष अनुमति लेनी होगी। टॉर्च या गाड़ियों की हेडलाइट का इस्तेमाल भी प्रतिबंधित किया गया है। जिला कलेक्टर डा.मंजू के मुताबिक जिले भर में चौकसी के आदेश दिए गए हैं। उधर जयपुर स्थित सवाई मानसिंह (एसएमएस) स्टेडियम को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। सोमवार सुबह खेल परिषद के आधिकारिक ईमेल पर एक मेल आया, जिसमें लिखा था कि ऑपरेशन सिंदूर÷ के बाद अब स्टेडियम को बम से उड़ाया जाएगा। जैसे ही यह मेल कर्मचारियों ने देखा, उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर क्यूआरटी, बम निरोधक दस्ता और अन्य सुरक्षा एजेंसियां पहुंचीं और पूरे स्टेडियम की गहन तलाशी ली गई । सुरक्षा के मद्देनजर स्टेडियम को फिलहाल सील कर दिया गया है।

जरूरत पड़ने पर हर मिशन के लिए तैयार, भर चुका था उनके पाप का घड़ा : भारतीय सेना

'मैं बहुत स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूं कि हमारे सभी सैन्य अड्डे और सभी उपकरण और प्रणालियां चालू हैं और जरूरत पड़ने पर अपने अगले मिशन के लिए तैयार व तत्पर हैं।'

एजेंसी

नई दिल्ली। 'ऑपरेशन सिंदूर' पर भारतीय सेना ने सोमवार को संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस की। प्रेस ब्रीफिंग के दौरान भारतीय सेना ने पाकिस्तानी मिराज के मलबे की क्लिप भी दिखाई। साथ ही पीएल-15 एयर-टू-एयर मिसाइल का मलबा दिखाया। एयर मार्शल एके भारती ने प्रेस ब्रीफिंग के दौरान कहा, 'यह दुख की बात है कि पाकिस्तानी सेना ने हस्तक्षेप करने का फैसला किया और वह भी आतंकवादियों के लिए, और इसलिए हमने जवाब देने का फैसला किया। एयर मार्शल एके भारती ने कहा, कल हमने पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर और पाकिस्तान में आतंकी ढांचे को नष्ट करने के लिए की गई सफल संयुक्त कार्रवाइयों के बारे में विस्तृत जानकारी दी थी। हमने दोहराया कि हमारी लड़ाई आतंकवादियों और उनके समर्थन ढांचे के खिलाफ है, न कि पाकिस्तानी सेना के खिलाफ। हालांकि, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पाकिस्तानी सेना ने आतंकवादियों

का समर्थन करने और हस्तक्षेप करने का फैसला किया, जिसके कारण हमें उचित जवाब देना पड़ा। उन्हें जो नुकसान हुआ है, उसके लिए पाकिस्तानी सेना जिम्मेदार है। एके भारती ने कहा, हमारे युद्ध-सिद्ध सिस्टम समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं और उन्होंने (पाकिस्तान) का डटकर मुकाबला किया है। एक और खास बात स्वदेशी वायु रक्षा प्रणाली, आकाश सिस्टम का शानदार प्रदर्शन रहा। पिछले एक दशक में भारत सरकार के बजटीय और नीतिगत समर्थन के कारण ही इतना मजबूत वायु रक्षा वातावरण तैयार करना और संचालित करना संभव हो सका। भारती ने कहा, पाकिस्तान द्वारा इस्तेमाल किए गए ड्रोन और मानवरहित युद्धक हवाई वाहनों की कई लहरों को स्वदेशी रूप से विकसित सॉफ्ट और हार्ड किल काउंटर-यूएएस सिस्टम और अच्छी तरह से प्रशिक्षित भारतीय वायु रक्षा कर्मियों ने नाकाम कर दिया। हमने सिविलियन और मिलिट्री इन्फ्रास्ट्रक्चर को न्यूनतम रखा, जबकि पाकिस्तानी सेना लगातार हमले कर रही थी। आपको पता है कि एयर डिफेंस सिस्टम की हमारे पास वैरायटी है, लो लेवल फायरिंग, सरफेस टू एयर मिसाइल, लॉन्ग और शॉर्ट रेंज मिसाइल शामिल हैं। हम पर ड्रोन और यूएवी से हमला किया गया। पाकिस्तानी हमले के दौरान हमारे सभी सिस्टम एकसाथ सक्रिय हुए।

दिल्ली को क्लीन और ग्रीन बनाने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध : सीएम रेखा गुप्ता

'दिल्ली को क्लीन और ग्रीन बनाने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है'

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, मंत्री प्रवेश वर्मा तथा विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता की उपस्थिति में विधानसभा परिसर में सोमवार को 500 किलोवाट के नए सौर ऊर्जा संयंत्र की आधारशिला रखी। यह परियोजना दिल्ली को स्वच्छ, हरित और विकसित बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है, जो केंद्र सरकार के 'मिशन 2047' के तहत दिल्ली को एक आदर्श शहर बनाने के विजन को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देगी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि यह परियोजना दिल्ली के लिए एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। दिल्ली को क्लीन और ग्रीन बनाने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। दिल्ली में बिजली की खपत लगातार बढ़ रही है और हमारा लक्ष्य 9,000 मेगावाट बिजली को ग्रीन एनर्जी में

परिवर्तित करना है। इस सौर संयंत्र से विधानसभा को प्रतिमाह 15 लाख रुपए की बचत होगी। उन्होंने केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के विजन की सराहना की और बताया कि दिल्ली में हाई-टेंशन तारों को हटाने के लिए 100 करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया गया है। इसके साथ ही, इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन देने की दिशा में भी सरकार तेजी से काम कर रही है। मंत्री प्रवेश वर्मा ने समारोह में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की कार्यशैली की प्रशंसा की। उन्होंने कहा, हमारी मुख्यमंत्री सुबह दिल्ली की सड़कों पर निकलती हैं, हजारों लोगों से मिलती हैं और दिनभर दिल्ली के विकास के लिए काम करती हैं। उनकी ऊर्जा और समर्पण प्रेरणादायक है। उन्होंने उपराज्यपाल विनय सक्सेना की भी तारीफ की, जिन्होंने दिल्ली में ऊर्जा क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। उन्होंने कहा, ÷पहले मैं सोचता था कि गवर्नर केवल औपचारिक भूमिका निभाते हैं और आराम से रहते है, लेकिन विनय सक्सेना ने मेरी सोच बदल दी। उनके नेतृत्व में दिल्ली में ऊर्जा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव हो रहे हैं।

विदेश सचिव विक्रम मिस्री और उनके परिवार को ट्रोलिंग की एनसीडब्ल्यू ने की निंदा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम की घोषणा के बाद सोशल मीडिया पर विदेश सचिव विक्रम मिस्री और उनके परिवार को ट्रोलिंग का सामना करना पड़ रहा है। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष विजया रहाटकर ने इसे निंदनीय बताया है। रहाटकर ने सोमवार को एक बयान में कहा कि विदेश सचिव विक्रम मिस्री के परिवार, विशेष रूप से उनकी बेटी के खिलाफ किए गए निंदनीय ऑनलाइन दुर्व्यवहार की राष्ट्रीय महिला आयोग कड़े शब्दों में निंदा करता है। विदेश सचिव की बेटी की व्यक्तिगत संपर्क जानकारी साझा करना गंभीर रूप से गैर-जिम्मेदाराना काम है। यह गोपनीयता का गंभीर उल्लंघन है, जो उनकी सुरक्षा को खतरे में डालता है। उन्होंने कहा कि विक्रम मिस्री जैसे देश के वरिष्ठतम सिविल सेवकों के

परिवार के सदस्यों पर इस तरह के व्यक्तिगत हमले न केवल अस्वीकार्य हैं, बल्कि नैतिक रूप से भी अक्षम्य हैं। उन्होंने अपील की कि लोग शालीनता, सभ्यता और संयमित व्यवहार करें।

आतंकवादी और उनके आका हमें उकसाते हैं तो उन्हें बख्शा नहीं जाएगा: मुख्तार अब्बास नकवी

एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि आतंकवादी और उनके आका हमें उकसाते हैं, तो उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। सोमवार को समाचार एजेंसी से बातचीत के दौरान मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि हमें अपनी सेना की वीरता और उपलब्धियों तथा हमारी सरकार के दूरदर्शी नेतृत्व पर बहुत गर्व है। हमारे नेतृत्व द्वारा दिखाए गए दृढ़ संकल्प पर पूरे देश को गर्व है। प्रधानमंत्री मोदी ने बहुत स्पष्ट और जोरदार संदेश दिया है कि अगर आतंकवादी और उनके आका हमें उकसाते हैं तो उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। अगर वे गोली चलाते हैं, तो उन्हें परिणाम भुगतने होंगे। यह आतंकवाद के प्रति हमारी जीरो टॉलरेंस की नीति का प्रमाण है और इसके परिणाम स्पष्ट हैं क्योंकि आतंकवादी और उनके आका अब चिल्ला रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब तक एक भी आतंकी जिंदा रहेगा, भारत की लड़ाई जारी रहेगी 'ऑपरेशन सिंदूर' के बारे में

मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि हमें अपनी सेना के शौर्य और पराक्रम पर गर्व है। हमारा जो नेतृत्व है, उस पर देशवासियों को गर्व है। पीएम मोदी ने स्पष्ट कर दिया है कि अगर वहां से एक गोली चलेगी तो जवाब में यहां से गोला चलाया जाएगा। उन्होंने विपक्ष पर आरोप लगाते हुए कहा कि विपक्ष अब इस मामले में राजनीति करने का मौका ढूंढ रहा है। अगर पाकिस्तान सबूत मांगेगा, तो यहां विपक्षी दल भी सबूत मांगने की कतार में खड़े हो जाएंगे। सरकार तय करेगी कि संसद का विशेष सत्र होना चाहिए या नहीं। एक सवाल के जवाब में भाजपा नेता ने कहा कि एक बात बहुत साफ है, सरकार ने भी यह स्पष्ट कर दिया है और यह लंबे समय से देश का संकल्प रहा है। जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर भी भारत का हिस्सा है। यह संसद का सर्वसम्मति से लिया गया संकल्प है। इसे लेकर कोई भ्रम या विरोधाभास नहीं है। सरकार ने स्पष्ट रूप से कहा है कि हमारी पार्टी का रुख भी यही है। भारत-पाक के सीजफायर के दौरान कांग्रेस के नेताओं की ओर से पूर्व पीएम इंदिरा गांधी की फोटो शेयर कर उन्हें याद करने पर भाजपा नेता ने कहा कि आप इंदिरा गांधी के सम्मान को कब तक राजनीतिक हथियार बनाते रहेंगे?

हरिद्वार में हर की पैड़ी पर बुद्ध पूर्णिमा पर्व पर उमड़ा आस्था का सैलाब

एजेंसी

हरिद्वार। उत्तराखंड के हरिद्वार में सोमवार को बुद्धपूर्णिमा के पावन पर्व पर मां गंगा में श्रद्धा-आस्था की डुबकी लगाने को लाखों श्रद्धालुओं की भीड उमड़ पड़ी। हर की पैड़ी स्थित पवित्र ब्रह्म कुंड सहित सभी प्रमुख घाटों विष्णु घाट, गऊघाट, सुभाष घाट,कुशावर्त घाट, हनुमान घाट आदि पर ब्रह्म मुहूर्त से ही श्रद्धालु स्नान करने पहुंचने लगे थे। देश के कोने-कोने से आए श्रद्धालुओं ने स्नान के साथ-साथ मां गंगा का पूजन कर मंदिरों में दर्शन किए और दान पुण्य किया। घाटों पर भजन कीर्तन व अन्य धार्मिक आयोजनों से आध्यात्मिक वातावरण की छटा चारों ओर दिखाई दी। मान्यता है कि आज के दिन भगवान विष्णु मां गंगा में वास करते हैं। आज ही भगवान नारायण के अवतारों में से नवम अवतार बुद्धावतार का दिन है।वैशाख में शुक्ल पक्ष की पूर्णमासी के दिन भगवान बुद्ध इस धरती पर अवतरित हुए थे। आज ही उनको बुद्धत्व यानी

ज्ञान की प्राप्ति हुई और आज ही के दिन उनका शरीर पूर्ण हुआ। इस पवित्र अवसर का लाभ उठाने देश के कोने कोने से लोग आए हुए हैं। भारी भीड़ को देखते हुए पुलिस प्रशासन पूरी तरह चक चौबंद था। बीती रात से ही ट्रैफिक प्लान लागू कर दिया गया था। पुलिस वह अन्य सुरक्षा बल मुस्तैदी से चप्पे चप्पे की निगरानी कर रहे हैं। आला पुलिस अधिकारी सवेरे से ही हरि की पौड़ी और कंट्रोल रूम में मौजूद रहकर सभी व्यवस्थाओं की निगरानी कर रहे हैं ।

छत्तीसगढ़ में भीषण सड़क हादसा, चार बच्चों और नौ महिलाओं की मौत

एजेंसी

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से लगे खरोरा में रविवार आधीरात रायपुर-बलौदबाजार रोड पर सारागांव के पास माजदा की पहले ट्रेलर फिर डंपर से टक्कर होने से 13 लोगों की मौत हो गई। हादसे में 10 से ज्यादा घायल लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। रायपुर कलेक्टर गौरव सिंह ने बताया कि देररात खरोरा इलाके में हुए हादसे में बड़ी संख्या में ग्रामीणों की मृत्यु की सूचना मिली है। घायलों को रायपुर के मेडिकल कालेज हास्पिटल में भर्ती कराया गया है।।हादसे में मरने वालों में चार बच्चे और नौ महिलाएं शामिल हैं। मृतकों की पहचान मोहंदी, धरसींवा निवासी टिकेश्वरी साहू (45 वर्ष), एकलव्य साहू (6 वर्ष), प्रभा साहू (34 वर्ष) और गीता साहू (54 वर्ष), गोंडवारा निवासी

कुमारी महिमा साहू (18 वर्ष), धरसीवां निवासी नंदनी साहू (53 वर्ष), आनंदगांव, बेमेतरा निवासी उमंग साहू (5 माह), वर्षा साहू (28 वर्ष) और भूमि साहू (4 वर्ष), नागौरा मंदिर, हसौद निवासी राजवती साहू (60 वर्ष), और चटौद, विधानसभा क्षेत्र निवासी कृति साहू (50 वर्ष), कुंती साहू (55 वर्ष) और टिकेश्वर साहू (35 वर्ष) के रूप में की गई है। एसएसपी लाल उमेंद सिंह ने बताया कि ग्राम चटौद के लोग स्वराज माजदा वाहन (सीजी 04, एमक्यू 1259) में छट्ठी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए ग्राम बाना बनारसी गए हुए थे। लौटते समय बलौदबाजार रोड पर सारागांव के पास रायपुर-माजदा वाहन की पहले ट्रेलर से टक्कर हुई। ट्रेलर में लोहे का स्ट्रक्चर था, जो दोनों ओर से तीन-तीन फीट बाहर निकला हुआ था। लोहे के उन स्ट्रक्चर से माजदा वाहन का डाला टकराया, जिससे सबसे अधिक हानि हुई। इसके बाद माजदा डंपर से टकराई। घटना में गैर इरादतन हत्या के तहत दर्ज प्रकरण दर्ज होगा। तीनों वाहनों के चालकों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। धरसींवा विधायक अनुज शर्मा, आरंग विधायक गुरु खुशवंत साहेब, एसपी और कलेक्टर ने अस्पताल पहुंचकर घायलों से मुलाकात कर उनका हालचाल जाना।

एक नजर

पिक्सल लर्न एजुकेशन एकेडमी के तरफ से डोरंडा के मेकॉन मे इंटर स्कूल कंपटीशन का आयोजन किया गया

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - पिक्सल लर्न एजुकेशन एकेडमी के तरफ से डोरंडा के मेकॉन में इंटर स्कूल कंपटीशन का आयोजन 11 मई को किया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार के इवेंट हुए। इसमें दार अल अरकम स्कूल मांडर के बच्चों ने भाग लियाऔर शानदार सफलता प्राप्त की। इस प्रतियोगिता में जमशेदपुर व अन्य शहरों के लगभग 10 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। दार अल अरकम स्कूल मांडर के बच्चों ने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के जूनियर विंग में ओवैस खान, सादिया फिरदौस, नायाब तबस्सुम, मोहम्मद यूसुफ – राज्य स्तर पर प्रथम स्थान वहीं सीनियर विंग में फातिमा शकीला, बारीरा फिरदौस, आइशा रहमानी, अंबर तारीक – राज्य स्तर पर तृतीय स्थान स्पेलिंग प्रतियोगिता में तनजीम फातिमा, सादिया फिरदौस, नायाब तबस्सुम, मोहम्मद यूसुफ – राज्य स्तर पर तृतीय स्थान, हैंडराइटिंग में जुवैरिया सुंदुस राज्य स्तर पर द्वितीय स्थान तथा इरम सबा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर स्कूल का मान बढ़ाया। स्कूल परिवार ने विजेताओं को उनकी मेहनत और सफलता पर हार्दिक बधाई दी '

चान्हो के ताला में राष्ट्रीय वयोश्री योजना योजना के तहत एक दिवसीय शिविर का आयोजन

दिव्य दिनकर संवाददाता

चान्हो - चांन्हो प्रखंड के ताला पंचायत भवन में सोमवार को राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अंतर्गत सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को निशुल्क सहायक उपकरण उपलब्ध कराने हेतु एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया इस शिविर में राष्ट्रीय वयोश्री योजना अंतर्गत सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को निशुल्क सहायक उपकरण उपलब्ध कराने हेत 100 वरिष्ट नागरिकों का जांच एवं पंजीकरण किया गया है। इस शिविर में व्हील चेयर,कमोड व्हील चेयर,वॉकिंग स्टीक, कान की मशीन, वॉकर, कमर बेल्ट, घुटना बेल्ट, इत्यादि सहायक उपकरण जांच एवं पंजीकरण के बाद निशुल्क वितरण किया जाएगा, शिविर आयोजनकर्ता पुनम उरांव (मुखिया ताला पंचायत) कमस्ती उरांव (पंचायत समिति सदस्य, ताला),अफरोज अंसारी (दिव्यांग समाजसेवी) के द्वारा शिविर आयोजन किया गया है,इस शिविर में दीप्ति आसरा रांची से जाहिद उपस्थित थे इस शिविर को सफल बनाने में सोमा उरांव ,मोजम्मिल अंसारी, एतवा उरांव, दुखना उरांव का महत्वपूर्ण सहयोग रहा ।

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर एक साथ एक समय में गृहे गृहे गायत्री यज्ञ का आयोजन

मंडरो: अखिल विश्व गायत्री परिवार के आह्वान पर बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर प्रखंड क्षेत्र के उत्तरी महादेववरन, शाहाबाद, हाट रोड, मिर्जाचौकी बाजार, निमगाछी, गांधीनगर, चौधरीपट्टी, बड़तल्ला, लॉकडाउन मार्किट, फौजदारी, सलेमपुर, वर्णवाल पट्टी समेत हजारों घरों में एक साथ एक समय में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गृहे गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के तहत यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस यज्ञ के लिए शांतिकुंज हरिद्वार से यज्ञ सामग्री के पैकेट सभी को दिए गए थे। वही अखिल विश्व गायत्री परिवार की प्रखंड समन्वयक सुप्रिया वर्णवाल के द्वारा बताया गया कि गायत्री हवन करने से आयु, आरोग्य ,धन,यश, प्रजा ,आत्मा और पशुओं की समृद्धि होती है। यह हवन नकारात्मकता को दूर करता है वातावरण को शुद्ध करता है और मन को शांत करता है ।गायत्री हवन करने से व्यक्ति की मनोकामनाएं पूरी होती है और जीवन में सुख समृद्धि आती है।ऑपरेशन सिंदूर चलकर पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को बर्बाद करने वाली भारतीय सेना के अदम्य साहस को नमन करने ,देश के चारों ओर रक्षा कवच बनाने और समर्थ भारत के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से बुद्ध पूर्णिमा को एक साथ एक समय में घर-घर गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। सामूहिक रूप से किए गए अनुष्ठान से एक वातावरण का निर्माण होता है। नागरिकों के आत्मविश्वास और सैनिकों के सुरक्षा में वृद्धि करता है ।इसे ध्यान में रखते हुए बुद्ध पूर्णिमा को यज्ञ दिवस के रूप में मनाया गया। वही बताया गया कि यह अभियान हर साल बुद्ध पूर्णिमा पर आयोजित किया जाता है। इसमें लोगों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है ।अभियान का मुख्य उद्देश्य घर-घर में गायत्री और यज्ञ की स्थापना करना है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं बल्कि एक वैज्ञानिक प्रक्रिया भी है।

विश्व रेड क्रॉस दिवस एवं रवीन्द्र जयंती प्रतियोगिताओं के विजेता हुए पुरस्कृत

हेनरी डुनेंट एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर आज भी युवाओं एवं साहित्यप्रेमियों के प्रेरणास्रोत : डॉ. एन. सी. गाँधी

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर। स्थानीय दीनबंधु उच्च विद्यालय स्थित रवीन्द्र सभागार में पिछले दिन विवेकानंद शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा संस्थान तथा क्रीड़ा संस्थान तथा योगमाया मानवोत्थान ट्रस्ट के युग्म बैनर तले आयोजित विश्व रेड क्रॉस दिवस एवं रवीन्द्र जयंती प्रतियोगिताओं के विजेताओं को समाजसेवी रीता चौरसिया, दीनबंधु स्कूल प्रबंधन समिति के अध्यक्ष डॉ. एन. सी. गाँधी, प्रधानाध्यापक काजल कांति सिकदार, झारखण्ड प्राइवेट स्कूल्स एसोसिएशन, देवघर जिलाध्यक्ष डॉ. जय चंद्र राज, वेक्सो इंडिया के संरक्षक गणेश प्रसाद उमर, केंद्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमार सिंह देव, समाजसेवी सुमन सौरभ एवं देवघर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष रवि कुमार केशरी के करकमलों से प्रशस्ति पत्रों से पुरस्कृत किया गया। ज्ञात हो सनराइज द्वारिका ऐकाडेमी के सुप्रतीत चटर्जी को प्रथम, सुप्रभा शिक्षा स्थली की श्रेया केशरी को द्वितीय, गीता देवी डीएवी पब्लिक स्कूल के उत्सव कुमार को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। रक्तदान-महादान है, शीर्षक निबंध लेखन प्रतियोगिता

में राम मंदिर बीपीजे हाई स्कूल की अंजलि कुमार ओझा को प्रथम, दीनबंधु उच्च विद्यालय की शिवानी झा को द्वितीय जबकि संदीपनी पब्लिक स्कूल की पलक झा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ था। मौके पर रवीन्द्र कविपाठ में प्रथम पुरस्कार विजेता धृति चटर्जी, नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थानधिकारी गीता देवी डीएवी पब्लिक स्कूल की अपेक्षा आर्या, द्वितीय स्थानधिकारी नंदन कानन लिटल फ्लावर स्कूल की मान्यता कुमारी ने अपनी अपनी प्रस्तुति से सबको मंत्रमुग्ध किया। मौके पर डॉ. गाँधी ने कहा- हेनरी डुनेंट एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर आज भी युवाओं एवं साहित्यप्रेमियों के प्रेरणास्रोत हैं। रवीन्द्र नाथ के व्यक्तित्व पर विचार प्रकट करते हुए काजल सिकदार ने कहा- रबीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता हैं। उन्हें बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगद्दष्टा माना जाता है। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं। वे एकमात्र कवि हैं जिसकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनीं- भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांङ्ला' - गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं।

सदर अस्पताल के सभागार में अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस आयोजित

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज फ्लोरेंसिया नाइटेंगल के याद में विश्व नर्सिंग दिवस के अवसर सदर अस्पताल देवघर के सभागार में विश्व नर्सिंग दिवस मनाया गया. सिविल सर्जन डॉ युगल किशोर चौधरी, उपाधीक्षक डॉक्टर प्रभात रंजन, डॉक्टर शरद कुमार, डाक्टर चित्तरंजन पंकज, डॉक्टर प्रियंका सहित झारखंड चिकित्सा एवं जन स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के अध्यक्ष मनोज कुमार मिश्र के नेतृत्व में वरीय एएनएम दीदी मीना पांडेय, अनीता कुमारी, मंजू टुडू के द्वारा सदर अस्पताल के दर्जनों नर्स के उपस्थिति में तालियों की गड़गड़ाहट के बीच केक काटकर मनाया गया. सिविल सर्जन ने सभी नर्सों को संबोधन करते हुए इमानदारी पूर्वक बीमार लोगों की सेवा करने का आव्हान किया साथ ही कहा कि आपके व्यावहार और सेवा भावना से ही मरीजों की आधी बीमारी ठीक हो जाती है. वहीं संघ के जिलाध्यक्ष श्री मिश्रा ने सभी एएनएम बहनो को

चाकलेट देकर उनका अभिवादन किया. श्री मिश्रा ने कहा जिस तरह से स्वास्थ्य सेवा लोगों के जिंदगी के लिए अहम है तो एएनएम के बिना स्वास्थ्य सेवा अधूरी है. आबादी के अनुपात में एएनएम की संख्या कम रहने के कारण इन पर कार्य दबाव अत्याधिक रहता है,लेकिन काम के अनुरुप इन्हें वेतन सहित अन्य सुविधाओं का अभाव रहता है. अनुबंध और आउट सोर्सिंग पर दस हजार के मानदेय पर इनकी नियुक्ति कर इनका शोषण किया जाता है. संघ ने सरकार से मांग की है कि आबादी के अनुरुप पांच हजार की आबादी पर दो एएनएम के अनुसार पद सृजन कर सभी पदों पर एएनएम की नियमित नियुक्ति की जाय, एएनएम का ग्रेड पे 2800 किया जाय, दस साल की सेवा पूरी कर चुके सभी एएनएम को एम ए सी पी का लाभ दिया जाय. अनुबंध या आउट सोर्सिंग पर बहाली में समान कार्य के बदले समान वेतन भुगतान किया जाय. कार्यक्रम में इनके अलावा संघ के संयुक्त सचिव संजीव मिश्र, उपाध्यक्ष रवि रंजन, विजय सिंह, शाहनवाज, सुरेस, शैलेश, रानी रीतम,मीना झा,उषा, अनीता, अंजू प्रियंका, संगीता सहित दर्जनों एएनएम मौजूद थी.

डिवाईन पब्लिक स्कूल की संस्थापक सह सचिव ममता किरण को भारत प्रतिभा सम्मान परिषद दिल्ली द्वारा किया गया सम्मानित

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

भारत प्रतिभा सम्मान परिषद दिल्ली द्वारा राजधानी दिल्ली में आयोजित तीसरे भारत प्रतिभा सम्मान पुरस्कार समारोह 2025 में डिवाईन पब्लिक स्कूल की संस्थापक सह सचिव ममता किरण को सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह का आयोजन प्रधानमंत्री संग्रहालय, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली में किया गया था। ममता किरण को यह पुरस्कार शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। ममता किरण अपने सामाजिक योगदान के कारण सैकड़ो वंचित परिवार, महिलाओं व बच्चों के लिए प्रेरणा स्रोत रही है। जब भी समाज के पिछड़े व वंचित वर्गों के मदद की बात आती है ममता किरण हमेशा सबसे आगे होती हैं। पुरस्कार स्वरूप ममता किरण को सनद व पदक प्रदान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में पुडूचेरी की पूर्व उपराज्यपाल और 1972 में भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के अधिकारी रैंक में शामिल होने वाली भारत की पहली

महिला आईपीएस डॉङ्क किरण बेदी व भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति अर्जन कुमार सीकरी उपस्थित थे। भारत प्रतिभा सम्मान परिषद द्वारा आयोजित किये जाने वाले इस पुरस्कार समारोह का उद्देश्य भारत की जमीनी स्तर की प्रतिभा को सम्मानित करना है। जिसके अंतर्गत वर्ष 2025 के कार्यक्रम में समाज और राष्ट्र के प्रति उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 14 अलग-अलग श्रेणीयों में ममता किरण सहित कुल 15 असाधारण व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। पुरस्कार प्राप्त करने की खुशी जाहिर करते हुए ममता किरण ने भारत प्रतिभा सम्मान परिषद को धन्यवाद दिया एवं भविष्य में भी स्वयं को शिक्षा व समाज के लिए समर्पित रखने की बात कही। उल्लेखनीय है कि भारत प्रतिभा सम्मान परिषद एक गैर-लाभकारी संगठन है जो असाधारण व्यक्तियों और संगठनों को सम्मानित करने और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को मान्यता देने के लिए काम करता है। यह परिषद भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है और नीति आयोग और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के साथ पंजीकृत है। ममता किरण को इससे पहले भी अप्रैल 2025 में ग्लोबल ट्रायम्फ फाउंडेशन द्वारा शेरेटन ग्रैंड पैलेस, इंदौर में आयोजित वर्ल्ड वीमेन आइकॉन अवार्ड 2025 में वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला आइकॉन पुरस्कार प्रदान किया गया है। जिसकी जानकारी भी ममता किरण ने दी साथ ही बताया कि ऐसे अवाड्र्स का मिलना गौरवान्वित करने के साथ ही समाज के लिए आगे आने को प्रेरित करता है और वे हमेशा समाज सेवा में अपना योगदान देती रहेंगी।

झारखंड लॉन बॉल संघ के उपाध्यक्ष बने डॉ सुनील खवाड़े

देवघर की टीम भी भाग लेगी बोलिंग प्रीमियर लीग में ऑक्शन के द्वारा टीम लिया जाएगा

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

झारखंड लॉन बॉल संघ के महासचिव मधुकांत पाठक के अध्यक्षता में एक मीटिंग जूम ऐप के माध्यम से किया गया।जिसमें झारखंड के सभी जिले के अध्यक्ष/सचिव, राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय, खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिसमे लॉन बॉल से संबंधित विषयों पे चर्चा किया गया।।सभी जिलों से कम से कम 10 खिलाड़ियों 5 महिला एवं पुरुष 5 का रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य किया गया।। कोच और ऑफिशियल के लिए सेमिनार आयोजित किया जाएगा। इस दौरान झारखंड लॉन बॉल संघ के महासचिव मधुकांत पाठक ने देवघर जिला ओलंपिक संघ के अध्यक्ष डॉ

सुनील खवाड़े को उपाध्यक्ष पद का प्रस्ताव दिया जिसे सर्व सम्मति से सभी ने स्वीकार करते हुए झारखंड लॉन बॉल संघ का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया।। झारखंड लॉन बॉल संघ के महासचिव मधुकांत पाठक ने झारखंड बॉल्स प्रीमियर लीग कराने पर भी विचार किया गया जिसमें संभावित 6 टीम के खेलने की संभावना है।।जिसमें आसाम,बंगाल,देवघर,रांची,बोकारो और एक अन्य टीम के भाग लेने की संभावना है। जो जून के अंतिम सप्ताह में होने की संभावना है।

सुनील खवाड़े ने जिम्मेदारी देने के लिए महासचिव मधुकांत पाठक एवं सभी जिला के अध्यक्ष / सचिव का आभार प्रकट किया और कहा की जहां खेल वहां खवाड़े है और जो जिम्मेदारी मिलेगी उसको निभाएंगे। देवघर जिला लॉन बॉल संघ के अध्यक्ष आशीष झा सचिव कृष्ण कुमार बर्नवाल, उपाध्यक्ष नवीन शर्मा ने पुष्प गुच्छ देकर डॉ सुनील खवाड़े को उपाध्यक्ष बनने पे बधाई दिया। उपाध्यक्ष बनने में देवघर जिला लॉन बॉल संघ के पदाधिकारियों सहित खिलाड़ी सूरज,शुभम, आइनिश,सोनी,छोटी,मयूरी गुप्ता ने बधाई दिया।।

गुरु पूर्णिमा पर अखंड कीर्तन का आयोजन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर-गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर 24 घंटे का अखंड कीर्तन बाबा नाम केवलम का आयोजन किया गया एवं जिसका समापन आज प्रातः में हुआ। आनंदमार्ग जागृति राजाबगीचा में प्रातः 5 बजे पांचजन्य के बाद जन्मोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। उसके बाद सम्पूर्ण हर्षोल्लास के साथ जन्मदिवस मनाया गया। जिससे पूरा भक्तिमय माहौल हो गया ।इस अवसर पर आश्रम एवं शहर में घूम घूम कर प्रसाद का वितरण किया गया। कार्यक्रम में सैकड़ो लोगों ने भाग लिया, इस अवसर पर आचार्य परमानन्द अवधुत जी ने मार्ग गुरुदेव श्री श्री आनंदमूर्ति जी के अवतरण एवं अवदान के बारे में बताया कि श्री श्री आनंदमूर्ति जी का जन्म 1921 में वैशाखी पूर्णिमा के

दिन बिहार के जमालपुर में एक साधारण परिवार में हुआ था। परिवार का दायित्व निभाते हुए वे सामाजिक समस्याओं के कारण का विश्लेषण उनके निदान ढूंढने एवं लोगों को योग, साधना आदि की शिक्षा देने में अपना समय देने लगे। उसके आचार्य ब्रजगोपालनंद अवधूत जी ने संस्था के सन्दर्भ में बताया कि सन् 1955 में उन्होंने आनंद मार्ग प्रचारक संघ की स्थापना की। श्री श्री आनंदमूर्ति जी ने समझा कि जिस जीवन मूल्य (भौतिकवाद) को वर्तमान मानव अपना रहे हैं वह उनके न शारीरिक व मानसिक और न ही आत्मिक विकास के लिए उपयुक्त है अतः उन्होंने ऐसे समाज की स्थापना का संकल्प लिया, जिसमें हर व्यक्ति को अपना सर्वांगीण विकास करते हुए अपने मानवीय मूल्य को ऊपर उठने का सुयोग प्राप्त हो। उन्होंने कहा कि हर एक मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में विकसित होने का अधिकार है और समाज का कर्तव्य है कि इस अधिकार को ठीक से स्वीकृति दें। अगर व्यक्ति का लक्ष्य समान है तो उनके बीच एकता लाना संभव है। वरिष्ठ आचार्य भावनन्द अवधूत जी ने बताया की आध्यात्मिक भावधारा का सृजन कर विश्व बंधुत्व के आधार पर एक मानव समाज की स्थापना को वास्तविक रूप दिया जाना। तत्पश्चात भुक्ति प्रधान सुनील जी ने सबों का धन्यवाद ज्ञापन किये एवं बाबा जन्मदिन की हार्दिक दिये ।सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन आनंदमार्ग प्रचारक संघ देवघर के द्वारा किया गया।

क्रेशर प्लांट में अज्ञात चोरों द्वारा किया गया चोरी ,थाना में प्राथमिकी दर्ज

मंडरो: मिजाचौकी थाना क्षेत्र अंतर्गत एक क्रेशर प्लांट में अज्ञात चोरों द्वारा किया गया चोरी । मिली जानकारी के अनुसार क्रेशर मालिक रितिक जायसवाल द्वारा बताया गया कि मेरा क्रेशर प्लांट मौजा भुतहा प्लॉट नंबर 9 खाता नंबर 28 थाना मिजाचौकी जिला साहिबगंज में स्थित है ।जो कि कुछ दिनों से बंद पड़ा हुआ था ।जिसका देखरेख नाइट गार्ड मनोज ठाकुर है। दिनांक 12 मई को रात 1:00 बजे कुछ अज्ञात नकाबपोश लोग क्रेशर पर आए और गार्ड को रूम में बंद कर बैटरी 12 पीस ,दो इनवर्टर, गियर बॉक्स 5 पीस, कैमरा दो पीस उसका सारा सेटअप, मोटर चार पीस सीकर 90 फीट लंबा, तार 8 बंडल , टीवी 55 इंच व बहुत सारे इलेक्ट्रॉनिक सामान चोरी कर लिया गया। वही चोरी मामले को लेकर मिजाचौकी थाना में प्राथमिकी दर्ज करने को लेकर आवेदन दिया गया। वही 29/25 प्राथमिकी दर्ज कर मिजाचौकी पुलिस द्वारा मामले की जांच की जा रही है।

प्रखंड विकास पदाधिकारी -सह- अंचल अधिकारी ने विभिन्न विकास योजनाओं का किया निरीक्षण

साहिबगंज: प्रखंड विकास पदाधिकारी- सह- अंचल अधिकारी मो. यूसुफ ने आज राजमहल प्रखंड के पंचायत कसवा, लालमाटी एवं खुटहरी का दौरा कर ग्रामीण विकास विभाग की विभिन्न योजनाओं का निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान पंचायत कसवा और लालमाटी में अबुआ आवास योजना के अंतर्गत लंबित आवास निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई। प्रखंड विकास पदाधिकारी ने लाभुकों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की और निर्देश दिया कि वे जल्द से जल्द आवास निर्माण कार्य पूर्ण करें। साथ ही पंचायत सचिव राकेश कुमार को निर्देशित किया गया कि दो दिनों के भीतर सभी पात्र लाभुकों को कार्य की प्रगति के अनुसार अगली किस्त का भुगतान सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके अलावा पंचायत खुटहरी में मनरेगा अंतर्गत संचालित बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना एवं बिरसा हरित ग्राम योजना का भी निरीक्षण किया गया। बीडीओ ने इस वर्ष चयनित लाभुकों को गड्ढा खुदाई के पश्चात घेराबंदी शीघ्र पूर्ण करने का निर्देश दिया। साथ ही उन्होंने रोजगार सेवक को निर्देशित किया कि आवास योजना के अंतर्गत कार्य कर रहे लाभुकों को मनरेगा मद से मिलने वाली मजदूरी का भुगतान समय पर सुनिश्चित किया जाए।निरीक्षण के दौरान बीपीओ गगन बापू, आवास कोऑर्डिनेटर रविकांत रवि, पंचायत सचिव सिराजुल हक, राकेश कुमार, राहुल कुमार सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

नालंदा जिले में भाभी से मजाक करने पर युवक की हत्या

नालंदा, । नालंदा जिले थरथरी थाना क्षेत्र अंतर्गत कौशल्या बिगहा गांव में सोमवार को बदमाश ने लाठी से पीटकर चचेरे भाई की हत्या कर दी। मृतक 45 वर्षीय अरुण गोप बताये जाते हैं। घटना के संबंध में बताया जाता है कि पत्नी को गाली देने के संदेह में बदमाश ने घटना को अंजाम दिया है।मृतक के परिजनों ने बातया कि अरुण सोमवार की सुबह बाजार से मटन खरीदकर लाएं और भाभी को वह पकाने बोले भाभी ने कुछ देर में पकाने की बात कही तो वह मजाक में गाली देने लगे समीप में चचेरी भाभी थी।

एक नजर

भाजपा बिहार झारखंड के क्षेत्रीय संगठन प्रभारी नागेंद्र नाथ त्रिपाठी राकेश के यहाँ पहुचे

उत्तर बिहार के बड़े शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ अशोक सिंह भी शादी में पहुँचे

सोनपुर, भाजपा नेता राकेश सिंह के बड़े भाई अरविंद सिंह की पुत्री की शादी में कई बड़े बड़े अधिकारी और एनडीए नेता का आने जाने का लगा रहा ताता भाजपा बिहार झारखंड के क्षेत्रीय संगठन प्रभारी नागेंद्र नाथ त्रिपाठी, सुबहेदार साहब, उत्तर बिहार के बड़े शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ अशोक सिंह जिला अध्यक्ष रंजीत सिंह महामंत्री निरंजन शर्मा महामंत्री विवेक सिंह महामंत्री धर्मेन्द्र साह मंडल अध्यक्ष दीपक गुप्ता बबलू सिंह दीपक शर्मा अभिषेक कुशवाहा अनिल सिंह जीतेन्द्र सिंह मंडल अध्यक्ष भूलन जी सहित अनेक लोगो का आगमन देर रात्री तक आने जाने का लगा रहा ताता सभी लोगो ने वर वधु को शुभकामनाएँ दिया इस अवसर पर गाड़ी का काफिला देर रात्री तक लगा रहा इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष मंटू बाबा रामानंद सिंह सुमंत तिवा-री मोनू सिंह चंदन सिंह राहुल सिंह संतोष शर्मा गुड्डू सिंह सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

दफन हुए शहीद मोहम्मद इम्तियाज मंत्री महोदय ने दी सलामी

पटना , ।भारत माता की जयघोष एंव शहीद ईम्तेयाज अमर रहें के साथ सारण के लाल शहीद मोहम्मद इम्तियाज को दफनाया गया जो जम्मू के आरएस पुरा सेक्टर मे पाक गोलीबारी मे 10/05/2025 को शहीद हुए। उनके अंतिम यात्रा मे बिहार सरकार के मंत्री कृष्ण कुमार सिंह मंटु जी उनके पैत्रिक आवास गरखा प्रखंड के नारायण पुर गाँव मे सामिल हुए। मंत्री महोदय ने शहीद के परिजन को बिहार सरकार द्वारा देय राशी इक्कीस लाख(21 लाख की घोषणा की)। तथा परिजन द्वारा स्मारक, शैक्षणिक संस्थान एंव चिकित्सालय शहीद के नाम पर करने की माँग रखी जिसे मंत्री महोदय ने स्वीकार कर माँग को जल्द पुरा कराने का घोषणा किया। मंत्री जी के साथ प्रियदर्शी चौरसीया जदयु नेता,सांसद प्रतिनिधि सह भाजपा नेता राकेश सिंह ,भाजपा नेता राहुल पासवान, भाजपा नेता संजय सिंह ,संतोष सिंह ,दीपु सिंह, मनोज पटेल, सुभाष राम, भाजपा नेता नजरे ईमाम, स्थानीय मुखिया गुलाम गौस, मो असलम,मो मुस्तफा,मु मनान मिंया आदि सामिल हुए।

सरस्वती शिशु मंदिर लल्लू पोखर जयंत चौधरी को दी गई विदाई

मुंगेर। सरस्वती शिशु मंदिर लल्लू पोखर में सोमवार को विद्यालय परिसर में सादे समारोह के बीच तत्कालीन प्रधानाचार्य जयंत चौधरी को विद्यालय परिवार की ओर से विदाई दी गई। विद्यालय प्रबंधन समिति की मौजूदगी में विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं ने अपने प्रधानाचार्य रहे जयंत चौधरी को भरे आवाज में शुभकामनाएं देते हुए नए दायित्व के लिए प्रेरित किया। विदाई समारोह की अध्यक्षता सरस्वती शिशु मंदिर लल्लू पोखर के नवनियुक्त प्रधानाचार्य राजेश कुमार ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में जिला निरीक्षक सतीश कुमार सिंह मौजूद थे। इस अवसर पर सरस्वती विद्या मंदिर तथा सरस्वती शिशु मंदिर के विभिन्न इकाइयों से आए प्रधानाचार्य तथा लल्लू पोखर विद्यालय के आचार्य समूह के द्वारा तत्कालीन प्रधानाचार्य जयंत चौधरी को अंग वस्त्र उपहार एवं पुष्प कुछ देकर सम्मानित किया गया। ज्योति युगल स-रस्वती शिशु मंदिर फुलका के प्रधानाचार्य दिनेश कुमार तथा पूर्व आचार्य श्रीधर कुमार ने उपहार एवं गुलाब भेंट कर जयंत चौधरी को नए दायित्व के लिए शुभकामनाएं दी। मौके पर पंकज कुमार सिन्हा, पूर्णिमा गुप्ता, निभा कुमारी, काव्या सोनी, शिप्रा गुप्ता, बिंदिया कुमारी, अकदस सना, मनीष कुमार, नीरज कुमार, निलेश कुमार मौजूद थे।

सामाजिक लोगों ने उठाया समाज को नशा मुक्त करने का बीड़ा

अररिया । फारबिसगंज के रामपुर में पिछले दिनों नशे में आदि युवकों द्वारा एक युवक की नृशंसतापूर्वक की गई हत्या के बाद नशा मुक्ति को लेकर ग्रामीणों द्वारा छेड़ा गया अभियान अब ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र में भी फैलनी शुरू हो गई है। नशे के आदि युवा पीढ़ी को नशा से मुक्त कराने और उन्हें जागरूक करने को लेकर फारबिसगंज के जुम्मन चौक पर सोमवार शाम सामाजिक कार्यकर्ता एवं राजद के नगर निकाय प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष वाहिद अंसारी के नेतृत्व में सामाजिक लोगों की एक बैठक हुई,जिसमें जुम्मन चौक और उसके आसपास के इलाकों में नशे की अवैध बिक्री और नशे के लिए आने वाले युवकों को खदेड़े जाने की रणनीति पर गंभीरतापूर्वक चर्चा की गई। बैठक में युवाओं को नशे से होने वाले नुकसान और स्वास्थ्य को होने वाली हानि को लेकर जागरूक करने पर बल दिया गया।समाज से नशा को मुक्त कर आदर्श समाज स्थापित किए

आनंद पूर्णिमा उत्सव — बाबा श्री श्री आनंदमूर्ति जी के जन्मोत्सव पर भव्य आयोजन

जमालपुर। बाबानगर के रूप में प्रसिद्ध जमालपुर शहर के वलीपुर स्थित आनंदमार्ग आश्रम, मधु मंजुल में विगत 9 मई से आरम्भ हुए 72 घंटे का अखंड संकीर्तन का विधिवत समापन हो गया। बाबा नाम केवलम्-के मंत्रोच्चारण के साथ चल रहे तीन दिवसीय संकीर्तन के उपरांत ध्यान और विशेष साधना का आयोजन किया गया। परम पूज्य गुरुदेव श्री श्री आनंदमूर्ति जी का जन्म वर्ष 1921 में बैसाखी पूर्णिमा, जो आनंद मार्ग में आनंद पूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध है, के पावन अवसर पर संपूर्ण विश्व में आनंदमार्गी अनुयायी बड़े हर्षोल्लास के साथ इस दिव्य दिन को मनाते हैं। प्रातः 6:07 बजे गुरुदेव के जन्म के शुभ क्षण पर शंख ध्वनि के साथ जयघोष किया गया। इसके उपरांत, प्रभात संगीतों में से पांच चयनित गीतों का समर्पित भाव से गायन किया गया। जिससे संपूर्ण वातावरण भक्ति और आनंद से भर गया। श्रद्धालु झूम उठे और भावविभोर हो गए। इसके पश्चात ध्यान, संकीर्तन और आनंदवाणी पाठ का आयोजन हुआ। ज्ञातव्य है कि आनंद मार्ग प्रचारक संघ की केंद्रीय समिति द्वारा प्रतिवर्ष आनंदवाणी का चयन किया जाता है, जिसे समस्त विश्व में इस दिन श्रद्धापूर्वक पढ़ा और आत्मसात किया जाता है। इस पाठ के माध्यम से समाज सेवा का संकल्प लिया जाता है। उक्त अवसर पर केंद्रीय संपर्क सचिव आचार्य कल्याणमित्रानंद अवधूत ने आनंद वाणी का सारगर्भित व्याख्यान दिया। तत्पश्चात एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जो वलीपुर आश्रम से प्रारंभ होकर सदर फाड़ी, सदर बाजार होते हुए बाबा के जन्मस्थान दलहट्टा, केशोपुर तक पहुंची। वहां पर भी प्रभात संगीत, संकीर्तन बाबा नाम केवलम कीर्तन एवं आनंदवाणी, व्याख्यान का आयोजन हुआ, जिसमें आचार्य रूद्रप्रकाशआनंद जी ने अपने

विचार प्रस्तुत किए। पूरे दिनभर वलीपुर आश्रम में विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। तपती गर्मी को देखते हुए आश्रम परिसर एवं बाबा जन्मस्थान पर शरबत का वितरण किया गया, जिससे हजारों स्थानीय लोग लाभान्वित हुए। इसके अतिरिक्त सैकड़ों लोगों को नारायण सेवा के अंतर्गत भोजन कराया गया तथा 104 साड़ी का वितरण भी किया गया। सांयकालीन कार्यक्रमों में प्रभात संगीत पर आधारित लगभग 10 प्रस्तुतियों का आयोजन होगा, जिसमें आनंद मार्ग के बच्चों द्वारा विशेष प्रस्तुति दी जाएगी। इसके उपरांत सम्मिलित आहार का भी आयोजन किया जाएगा। चार दिनों तक चले इस कार्यक्रम में आध्यात्मिक और सामाजिक दोनों ही स्तरों पर शहर को विशेष रूप से लाभ हुआ। यह उत्सव इस बात का प्रमाण है कि आनंद मार्ग केवल साधना ही नहीं, समाज सेवा में भी सदैव अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। इस आयोजन को सफल बनाने में डायसिस सचिव आचार्य सद्विरानंद अवधूत, केंद्रीय जनसंपर्क सचिव आचार्य कल्याणमित्रानंद अवधूत, मुंगेर के भुक्तिप्रधान रंजीत कुमार, हांगकांग के धर्म प्रचार सचिव आचार्य रूद्रप्रकाशानंद, रमेश, प्रफुल्ल, विवेक, श्यामकांत, ब्रजेश एवं अन्य समर्पित सेवकों ने योगदान दिया।

जगधत्री पूजा समिति की ओर से तपिश भरी गर्मी में रेल यात्रियों के बीच वितरित किए गए शीतल पेयजल

समिति की ओर से मॉडल रेलवे स्टेशन परिसर में लगाया निःशुल्क पेयजल सेवा शिविर

जमालपुर। तपिश भरी गर्मी से रेल यात्रियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से सोमवार को अमृत भारत रेलवे स्टेशन के रूप में विकसित जमालपुर स्टेशन परिसर में मां जगधत्री पूजा समिति रामपुर कॉलोनी जमालपुर की ओर से निशुल्क पेयजल सेवा शिविर लगाया गया। रेल यात्रियों के लिए लगाया जाए निशुल्क पेयजल सेवा शिविर का नेतृत्व समिति के संयोजक रिंकू सिंह कर रहे थे। सेवा समिति के माध्यम से जमालपुर रेलवे स्टेशन पर आने जाने वाले रेल यात्रियों के बीच निशुल्क शीतल पेयजल वितरित किए गए। सेवा शिविर के आरंभ में पूर्व टिकट निर-ीक्षक जेएन सिंह की पांचवी

पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सेवा शिविर के माध्यम से स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या एक एवं दो पर आने जाने वाले यात्रियों को पानी का बोतल वितरण किया गया। जबकि मुजफ्फरपुर-भागलपुर इंटरसिटी, किऊल-मालदा ट्रेन के जनरल बोगी में सफर करने वाले यात्रियों को पानी पिलाकर गर्मी से राहत पहुंचाने का काम किया। इधर जगधत्री पूजा समिति की ओर से यात्रियों की सेवा पानी पिलाकर किए जाने पर रेल अधिकारियों ने जगधत्री पूजा समिति को धन्यवाद ज्ञापन किया। स्टेशन प्रबंधक संजय कुमार ने कहा कि इस भीषण गर्मी में रेल यात्रियों को पानी पिलाकर समिति के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता पुण्य का कार्य कर रहे हैं। मौके पर सफाई निरीक्षक मुकेश कुमार, जगधत्री पूजा समिति के अध्यक्ष रामगोपाल शर्मा, सचिव कमल किशोर पासवान, कोषाध्यक्ष अमित कुमार, संजय सिंह, मनोज सिंह,विनोद सिंह, गुड्डू, उत्तम,रिया, छवि बनर्जी, बंदना सिंह, श्वेता सिंह, मिली गांगुली सहित समिति के अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

मोहनपुर गांव से चोरी हुई ट्रैक्टर पांच दिन बाद बरामद

दिव्य दिनकर संवाददाता

मुंगेर। धरहरा थाना क्षेत्र के मोहनपुर गांव से चोरी हुआ ट्रैक्टर पुलिस ने शाहपुर थाना क्षेत्र के रघुनाथपुर गांव से बरामद किया। साथ ही पुलिस ने इस संबंध मे एक को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार युवक सूर्यगढ़ा थाना क्षेत्र के अलीनगर गांव निवासी जनार्दन यादव का पुत्र धीरज कुमार है। पुलिस गिरफ्तार युवक से गहन पूछताछ कर रही है।युवक से पूछताछ के क्रम मे पुलिस को पता चला कि उसके पिता और भाई भी ट्रैक्टर चोरी मामले मे पूर्व से जेल मे बंद है।थानाध्यक्ष धीरेन्द्र कुमार पाठक ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर चोर को ट्रैक्टर के साथ पकड़ा गया है।बरामद किए गए ट्रैक्टर पर अंकित इंजन व चेसिस नंबर का मिलान कर लिया गया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि मंगलवार को आरोपी को कोर्ट मे पेश कर आगे की कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब हो कि मोहनपुर गांव निवासी कपिलदेव यादव के पुत्र नीतीश कुमार का 7 मई को खु-शहालपुर बजरंगबली के पास से ट्रैक्टर ट्रेलर समेत चोरी कर ली गई थी। घटनास्थल बाद आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा था । चर्चा है कि ट्रैक्टर चोरी मामले मे स्थानीय कुछ लोगो की मिलीभगत है। सीसीटीवी फुटेज मे कुछ लोगो पर आशंका जताई जा रही है।हालांकि पुलिस इसकी खंडन कर रही है।

बुद्ध पूर्णिमा पर अंबेडकर युवा मंच की ओर से आयोजित की गई बुद्ध जयंती सह महापरिनिर्वाण दिवस मनाया

मुंगेर। बुद्ध पूर्णिमा के पावन मौके पर सोमवार को मुंगेर जिला मुख्यालय से सटे पूरब सराय स्थित संत शिरोमणि रविदास आश्रम में अंबेडकर युवा मंच के तत्वावधान में बुद्ध जयंती सह महापरिनिर्वाण दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वाल्मीकि पासवान व मंच संचालन प्रदेश अध्यक्ष मणि कुमार बौद्ध ने किया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता बीआरएम कॉलेज मुंगेर के प्राध्यापक प्रोफेसर डॉक्टर अभय कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि आज का दिन बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि महात्मा बुद्ध आज के ही दिन जन्म लिए थे। आज ही के दिन इनको ज्ञान की प्राप्ति हुई थी और आज के ही दिन महात्मा बुद्ध महापरिनिर्वाण हुए थे। दुनिया को चार आर्य सत्य दिए, इस संसार में दुख है। इसका कारण है, तो इस

दुख का निवारण भी है। महात्मा बुद्ध ने कहा था कि मैं कोई मु-क्तिदाता नहीं हूं, बल्कि मार्गदर्शक हूं। बुद्ध ने हमें युद्ध नहीं मानवता का पाठ पढ़ाया। भारत बुद्ध की धरती है, बुद्ध ने मानवता के पाठ पढ़ाया। मणि कुमार बौद्ध ने अष्टांगिक मार्ग पर चर्चा करते हुए कहा कि अष्टांगिक मार्ग बुद्ध द्वारा सिखाई गई प्रथाओं का एक समग्र और परस्पर संबद्ध समूह है, जो स्वयं को दुख से मुक्ति दिलाने और ज्ञान प्राप्त करने का एक तरीका है। रिसर्च स्कॉलर हेमंत कुमार ने पंचशील के महत्व पर विशेष रूप से चर्चा किया। जबकि रिसर्च स्कॉलर अमन रंजन यादव ने संघ, धम्म एवं दसशील पर विशेष चर्चा की। मौके पर अवधेश पासवान, रंजीत पासवान, रघुनंदन दास, चंदन दास ,संजय दास ,राकेश कुमार, मिथिलेश कुमार, विकास चंद्र, उजाला चंद्रा, सुधा पासवान, नंदन पासवान, विपिन कुमार, वकील वीरेंद्र कुमार, आजाद गौतम,शिक्षक राम जी मौजूद थे।

बुद्ध ने दिया था अमन चैन व शांति का संदेश:तेजस्वी

पूर्वी चंपारण, । अमन चैन व शांति का संदेश बुद्ध ने विश्व को दिया था, हमारे देश की यह खूबसूरती है कि अलग-अलग भाषा पहनावा यानी अनेकता मे एकता ही हमारी पहचान है। बेरोजगारी इस वक्त की सबसे बड़ी दुश्मन है, इससे हमसभी को लड़ना होगा। बिहार मे प्रति व्यक्ति आय मे बिहार सबसे पिछड़ा है । अब बिहार मे एक नये सरकार की गठन आपलोग किजिये, हमारी सरकार बनने के बाद बिहार को एक समृद्ध राज्य बनायेंगे । पहाड़पुर प्रखंड क्षेत्र के सिसवा कोड़र गाँव मे स्थित बौद्ध विहार में सोमवार को बुद्ध जयन्ती के अवसर पर आयोजित बुद्ध पूर्णिमा महोत्सव मे मुख्य अतिथि के रुप मे बिहार विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा,कार्यक्रम की शुरूआत बौद्ध विहार मे स्थित भगवान बुद्ध मे मूर्ति पर माल्यार्पण साथ किया गया। मौके पर पीसी चन्द्रा व केसरिया के भंते बुद्ध शरण के मौजूद रहे। कार्यक्रम को राजद जिलाध्यक्ष व कल्याणपुर विधायक मनोज यादव,आलोक मेहता संजय यादव विधायक शशि सिंह राजेन्द्र कुमार राम लक्ष्मीनारायण यादव व कांग्रेस जिलाध्यक्ष गप्पू राय ने भी किया कार्यक्रम की अध्यक्षता नयन कुशवाहा व मंच संचालन दुर्गेश नारायण सिंह ने किया । कार्यक्रम

में बौद्ध विहार संचालन समिति के अध्यक्ष आनन्द कुश-वाहा उपाध्यक्ष बुलेट सिंह कुशवाहा महासचिव शैलेश सिंह कुशवाहा संजय सिंह कुशवाहा चितरंजन कुशवाहा अखिलेश सिंह मौर्य सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा शत्रुघन कुश-वाहा अवधेश सिंह कुशवाहा अमित सिंह कुशवाहा अनिल कुशवाहा नीरज मौर्य मुकेश कुशवाहा अरुण कुशवाहा मधुरेन्द्र कुशवाहा सहित भारी संख्या मे लोग मौजूद थे।

शेखपुरा पुलिस को मिली बड़ी कामयाबी, मोस्ट वांटेड नक्सली व बैंक लुटेरा सहित इनामी अपराधी गिरफ्तार

कैमूर का कुख्यात शूटर व शेखपुरा का इनामी बदमाश पकड़ा गया

रंजीत विद्यार्थी

शेखपुरा (मुंगेर): मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत शेखपुरा जिला पुलिस एवं एसटीएफ को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है. बिहार स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने दो दिनों तक अलग-अलग जिलों में छापेमारी कर चार वांछित अपराधियों को गिरफ्तार किया है. इनमें एक नक्सली, एक बैंक डकैती का अभियुक्त एक कुख्यात शूटर और शेखपुरा का टॉप-10 इनामी बदमाश धनराज शामिल है. सभी अभियुक्त लंबे समय से फरार चल रहे थे और इन पर कई संगीन धा-राओं में मामले दर्ज हैं. एसटीएफ की कार्रवाई से तीनों जिलों की पुलिस को बड़ी सफलता मिली है. गया जिले के आमस थाना क्षेत्र से वांछित नक्सली देव कुमार पासवान धराया: एसटीएफ की विशेष टीम ने 10 मई को गया जिले के आमस थाना क्षेत्र से वांछित नक्सली देव कुमार पासवान को गिरफ्तार किया. उल्लेखनीय है कि 8 नवंबर 2018 को डुमरिया थाना क्षेत्र के जंगलों में सुरक्षा बलों द्वारा चलाये गये सर्च ऑपरेशन के दौरान नक्सलियों ने आइईडी ब्लास्ट किया था. इस घटना में देव कुमार की संलिप्तता पाई गई थी. लंबे समय से वह फरार चल रहा था. मुजफ्फरपुर में बैंक लूट का आरोपी चंदन कुमार पक-ड़ा गया: उसी दिन मुजफ्फरपुर जिले के कांटी थाना क्षेत्र से वांछित अपराधी चन्दन कुमार को गिरफ्तार किया गया. वह ब्रजेश कुमार का पुत्र है और मीनापुर थाना क्षेत्र के जामिन मठिया का निवासी है. उस-के खिलाफ मोतीपुर थाना कांड संख्या 41/20 के तहत धारा 395 भा.दं.वि. के अंतर्गत मामला दर्ज है. इस कांड में बैंक ऑफ इंडिया,

मोतीपुर शाखा से करीब 14 लाख रुपये की लूट की गई थी. जांच में सामने आया कि चन्दन इस डकैती का मुख्य अभियुक्त है. एसटीएफ ने उसे कांटी क्षेत्र से छापेमारी कर पकड़ा. कैमूर के खजुरा बाजार हत्याकांड में शामिल मो अफरोज गिरफ्तार: 11 मई को एसटीएफ ने पटना के फुलवारीशरीफ थाना क्षेत्र से कुख्यात अपराधी मो अफरोज को दबोच लिया. वह मो फिरोज का पुत्र है और बीबीगंज चिटकोली, पटना का निवासी है. उस पर दुर्गावती थाना, कैमूर के कांड संख्या 150/25के तहत बीएनएस की धारा 109, 103, 3(5) तथा आर्म्स एक्ट की धारा 27 के तहत मामला दर्ज है. मो अफरोज ने अपने साथियों के साथ नौ मई को खजुरा बाजार (दुर्गावती) में फायरिंग की थी, जिसमें उत्तर प्रदेश के चन्दौली जिले के निवासी तारकेश्वर पासवान एवं कृष्णा पासवान की गोली लगने से मौत हो गई थी. वह हत्या, लूट और आर्म्स एक्ट से जुड़े कई मामलों में पटना एवं कैमूर जिले में वांछित था. शेखपुरा का टॉप-10 इनामी बदमाश धनराज गिरफ्तार बिहार एसटीएफ और शेखपुरा पुलिस ने 11 मई को बड़ी कार्रवाई करते हुए जिले के टॉप-10 अपराधियों में शामिल 25 हजार के इनामी बदमाश राजकुमार उर्फ धनराज कुमार को गिरफ्तार कर लिया. वह बरबीघा थाना क्षेत्र के बेलवा गांव निवासी सोनू राउत का बेटा है और कई संगीन मामलों में वांछित था. पुलिस ने उसे बरबीघा थाना कांड संख्या 50/24, मामले में गिरफ्तार किया है. उस पर भारतीय दंड विधान की धारा 394 के तहत लूट का केस दर्ज था. जानकारी के अनुसार, 3 फरवरी 2024 को बरबीघा क्षेत्र के राकेश कुमार के घर में हथियारबंद लुटेरों ने धावा बोल दिया था. अपराधियों ने परिवार को बंधक बनाकर स्वर्ण आभूषण और नगदी लूट ली थी. जांच में राजकुमार उर्फ धनराज की संलिप्तता सामने आई थी, जिसके बाद से वह फरार चल रहा था.उस-की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था. एसटीएफ और शेखपुरा पुलिस की संयुक्त टीम ने गुप्त सूचना पर छापेमारी कर उसे पकड. लिया. धनराज के खिलाफ बरबीघा थाना में लूट, रंगदारी और हथियारबंदी से जुड़े कई गंभीर मामले दर्ज हैं. पुलिस अब उससे पूछताछ कर उस-के गैंग और अन्य वारदातों की क-ड़ियां जोड़ने में जुटी है. उसकी गिरफ्तारी से इलाके में दहशत के बाद भी राहत का माहौल है.

आतंक पर पाक को कड़ी चेतावनी देते रणनीतिक बदलाव

>> विचार

“ ऑपरेशन सिंदूर के बाद सरकार के प्रवक्ता द्वारा दी गई प्रस्तुति में, सीमा पार से चलाए जा रहे आतंकवाद से हुई क्षति को रेखांकित करने के वास्ते पिछले आतंकी हमलों (2001 में संसद पर हमले से लेकर मुंबई 2008, उड़ी 2016, पुलवामा 2019 और पहलगाम हमले) का लेखा-जोखा दिखाया गया, जिसके अंत में 'ङ्खअब और नहीं' स्क्रीन पर चमका। भले ही यह प्रस्तुति नाटकीय दिखाई दे, लेकिन यह भारत के संकल्प को रेखांकित करती है कि वह पाकिस्तानी धरती से निकल रहे आतंकवाद को और बर्दाश्त नहीं करेगा। द्वितीय, सीजफायर के बाद पाकिस्तानी सेना के सामने दो विकल्प हैं।

ले.जन. डीएस हुड्डा (से.नि.)

छह-सात मई की रात, भारत ने ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया, जिसमें पाकिस्तान में आतंकवादी ढांचे के खिलाफ शृंखलाबद्ध सैन्य हमले किए गए। नौ आतंकी शिविरों को निशाना बनाया, जिनमें से पांच पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में और चार उसके पंजाब प्रांत में थे। सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों में मुरीदके और बहावलपुर रहे। लाहौर के नजदीक मुरीदके लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) और उसके प्रमुख संगठन जमात-उद-दावा का मुख्यालय है। द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ), जिसने पहलगाम नरसंहार की जिम्मेदारी ली, एलईटी से संबंधित बताया जाता है। बहावलपुर जैश-ए-मोहम्मद का गढ़ है। इसके बाद दो दिन और यह ऑपरेशन चला जिसमें दोनों ओर से सीमा पर गोलाबारी हुई। भारत ने दुश्मन के कई शहरों पर मिसाइलें गिराई वहीं पाक की ओर से भी ऐसी कोशिशें हुई। अब 10 मई को सीजफायर का ऐलान हुआ। ऑपरेशन सिंदूर 2016 और 2019 में सीमा पार किए गए सैन्य हमलों की तुलना में ङ्ख पैमाने और दायरे में ङ्ख काफी बड़ा रहा। इसका संदेश कहीं अधिक तगड़ा और स्पष्ट है। जिसमें, पाकिस्तान से निबटने के लिए भारत की भविष्य की रणनीति में किए गए कुछ महत्वपूर्ण बदलाव झलकते हैं। प्रथम, बड़े आतंकी हमलों का दंडात्मक प्रतिकर्म होगा। चूंकि 2016 और 2019 के सीमित हमले पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद को एक औजार की भांति इस्तेमाल किए जाने वाली अपनी राष्ट्रीय नीति त्यागने में असरदार नहीं रहे, इसलिए उन लोगों को दर्द महसूस करवाना जरूरी बन गया, जो आतंकवादी करतूतों को नियंत्रित कर रहे हैं। यदि पाकिस्तानी सेना आतंकवादी नेतृत्व पर लगाम लगाने को तैयार नहीं, तो भारत सैन्य संसाधन का उपयोग करके ऐसा करेगा। भारत ने रणनीतिक और सामरिक कारणों से लंबे समय तक संयम मुद्रा अपनाए रखी। हालांकि, बदलते सुरक्षा परिवेश, विशेषतः पहलगाम हमले ने, पुनर्संतुलन में उत्प्रेरक का काम किया। 6-7 मई की रात बहावलपुर और मुरीदके जैसी अंदरूनी जगहों को निशाना बनाना संकेत है कि भारत अब सरसरी जवाबी

कार्रवाई पर्याप्त नहीं मानता। नया दृष्टिकोण सीमा पार से आतंकवाद को बढ़ावा देने वालों के लिए लागत-लाभ वाली गणना बदलने का प्रयास करता है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद सरकार के प्रवक्ता द्वारा दी गई प्रस्तुति में, सीमा पार से चलाए जा रहे आतंकवाद से हुई क्षति को रेखांकित करने के वास्ते पिछले आतंकी हमलों (2001 में संसद पर हमले से लेकर मुंबई 2008, उड़ी 2016, पुलवामा 2019 और पहलगाम हमले) का लेखा-जोखा दिखाया गया, जिसके अंत में 'ङ्खअब और नहीं' स्क्रीन पर चमका। भले ही यह प्रस्तुति नाटकीय दिखाई दे, लेकिन यह भारत के संकल्प को रेखांकित करती है कि वह पाकिस्तानी धरती से निकल रहे आतंकवाद को और बर्दाश्त नहीं करेगा। द्वितीय, सीजफायर के बाद पाकिस्तानी सेना के सामने दो विकल्प हैं। या तो वह स्वयं द्वारा लंबे समय से पोषित सैन्य-जिहाद परिसर को खत्म करे या फिर देश को भारत के साथ विनाशकारी संघर्ष में डुबाने का जोखिम उठाए। जो पाकिस्तान को और अधिक अस्थिरता और संकट में धकेल सकता है। दशकों से, पाकिस्तानी सेना ने जिहादी समूहों को अपनी रणनीतिक संपत्ति के रूप में माना है, उनका उपयोग भारत को जख्म देने के लिए किया जाता है, जबकि आधिकारिक रूप से इनकार करता है। ऑपरेशन सिंदूर के ज़रिए भारत वे स्पष्ट किया कि राज्य और उसके द्वारा प्रायोजित छद्म स्वरूपों के बीच कोई अंतर नहीं है। पाकिस्तान में कई अंदरूनी जगहों को निशाना बनाकर भारत ने संकेत दे दिया है कि सुरक्षित पनाहगाहें भी अब उतनी सुरक्षित नहीं रही। प्रेस ब्रीफिंग में 6-7 मई की कार्रवाई पर विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने कहा कि भारत की 'कार्रवाई नपी-तुली, चीजों को और आगे न भड़काने वाली, आनुपातिक और जिम्मेदाराना थी। इसके निशाने का केंद्र आतंकवादी ढांचे को नष्ट करना और भारत में भेजे जाने वाले आतंकवादियों को निष्क्रिय करना था'। यह पाकिस्तान के लिए संदेश था कि अगर वह किसी भी सैन्य जवाबी कार्रवाई से परहेज करे और आतंकवादी गतिविधियों पर लगाम लगाने के दीर्घकालीन उपाय करे, तो बढ़ते तनाव को नियंत्रित किया जा सकता है। हालांकि पाकिस्तानी सेना ने प्रतिक्रिया में युद्ध जैसे हालात रखे, जिसकाभारतीय सेना ने माकूल जवाब दिया। तृतीय, भारत इस बारे स्पष्ट है कि परमाणु युद्ध की नौबत बनने से जरा पहले तक, सीमित पारंपरिक संघर्ष के वास्ते गुंजाइश मौजूद है। जब भी भारत-पाकिस्तान संकट बनता है, तो पाकिस्तान सबसे पहले अपना परमाणु कार्ड लहराने लग जाता है। मंत्री हनीफ अब्बासी ने कहा कि अगर भारत सिंधु जल संधि को निलंबित करके पाकिस्तान को पानी की आपूर्ति रोकता है, तो इस्लामाबाद परमाणु हथियारों से हमला करने को तैयार रहेगा। पाकिस्तान के राजदूत ने भी ऐसी धमकी दी। पाकिस्तान की परमाणु ब्लैकमेलिंग से भारत अब खुद को बंधक नहीं मानता। पारंपरिक बलों के इस्तेमाल के जरिए पाकिस्तान के अंदर घुसकर आतंकी ढांचे को निशाना बनाने में वाले तौर-तरीके में धीरे-धीरे बदलाव आया है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तानी पंजाब समेत कई आतंकी गढ़ों पर धावा बोलने में, हवाई हमले की उपयोगिता के रूप में नया मानक स्थापित हुआ है। चतुर्थ, भारत में हुए आतंकी हमलों के तार पाकिस्तान से जोड़ने वाले प्रत्यक्ष सबूत उपलब्ध करवाने की कुछ अंतरराष्ट्रीय हलकों की मांग अब जाती रही है। भारत दशकों से पाक प्रायोजित आतंकवाद का शिकार रहा है और जब भी वह कहता है कि आतंकवाद का स्रोत पाकिस्तान है, तो यह बात सही है। समस्या यहां हमले करने वाले की नहीं, बल्कि पाकिस्तान में बैठे आतंकवादी और उस सैन्य नेतृत्व की है, जो आतंकवाद को पाल-पोस रहे हैं। अकाट्य सबूत की मांग छद्म युद्ध की प्रकृति को नजरअंदाज करती है। आतंकी संगठनों का ढांचा ही इस प्रकार तैयार किया जाता है कि सिद्ध करना मुश्किल हो जाए। भारत में आतंकी हमलों की निरंतरता, अपराध करने वालों की पहचान, प्रशिक्षण केंद्र और फंडिंग स्रोत- ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र की ओर इशारा करते हैं जो राज्य के संरक्षण बिना काम नहीं कर सकता। पंचम, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए भी एक संदेश है। आतंकवाद को शह-मदद करने वाले पाकिस्तान को जवाबदेह ठहराने में संयुक्त राष्ट्र जैसी वैश्विक संस्थाओं की अक्षमता को लेकर भारत में निराशा है। बेशक,भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय जनमत और कूटनीतिक समर्थन जुटाना अहम है किंतु पाकिस्तान के आतंकवाद का जवाब देने में, भारत के लिए विकल्पों पर निर्णय लेते वक्त अड़चन बनने में ये कारक अहम नहीं रहे। इस बार उकसावे के बावजूद संयम बरतने का आह्वान करने वाली बातों को भारत ने नजरअंदाज किया। तीन दिन चले ऑपरेशन सिंदूर ने नए सैद्धांतिक मानदंड स्थापित किए हैं कि आतंकी ढांचे पर हमला किया जाएगा; कि परमाणु हमले का डर दिखाना छिपकर करतूतें करने वालों को नहीं बचा पाएगा; कि वैश्विक समुदाय की नैतिक दुविधा भारत की संप्रभुता के विकल्पों को नजरअंदाज नहीं कर सकती; कि पाकिस्तानी सेना को जिहादी समूहों के साथ लंबे समय से जारी अपने गठजोड़ के परिणामों का सामना करना होगा। यह स्थिति दक्षिण एशिया को कम स्थिर क्षेत्र बनाती है। यदि पाकिस्तान अब भी आतंकवाद को राज्य नीति के औजार के रूप में इस्तेमाल करने की राह पर बढ़ता रहा, तो उसे भविष्य में कठोर सच्चाई का सामना करना होगा।

(लेखक थल सेना की उत्तरी कमान में कमांडर रहे हैं।)

संपादकीय

'ऑपरेशन सिंदूर' अधूरा

एयर डिफेंस सिस्टम एक्टिव हो गया है। यह युद्धविराम नहीं है।' जम्मू-कश्मीर के कुछ इलाकों से लेकर पंजाब और राजस्थान के कई शहरों और गुजरात के कच्छ तक पाकिस्तान ने ड्रोन हमले कर सेना के ठिकानों और आम नागरिक जिंदगी को निशाना बनाने की कोशिश की। अंततः नाकाम रहा और उसके हमलों को हवा में ही नष्ट कर दिया गया। क्या युद्धविराम का सच यही है? गंभीर सवाल यह है कि क्या भारत ने आतंकवाद के खिलाफ अपना तय लक्ष्य हासिल कर लिया है? भविष्य में देश में आतंकी हमला होगा, तो क्या उसे वाकई 'युद्ध' करार देते हुए भारत पलटवार करेगा? बेशक भारतीय सेनाओं ने जिस तरह आतंकियों के अड्डे 'मिट्टी-मलबा' किए हैं और 100 से अधिक आतंकियों को मौत के घाट उतारा है, वह निश्चित ही विराट सफलता है, लेकिन आतंकियों का आका पाकिस्तान बच गया है। बहुत कुछ मिट्टी में मिलाया नहीं जा सका। पाकिस्तान की वायुसेना का बर्बाद ढांचा फिर से खड़ा किया जा सकता है। चीन और तुर्किये की मदद से एयर डिफेंस, रडार सिस्टम और अन्य सुरक्षा बंदोबस्त दोबारा हासिल किए जा सकते हैं। आईएमएफ ने पाकिस्तान का एक अरब डॉलर का कर्ज मंजूर कर दिया है। हालांकि यह राशि हथियारों के लिए नहीं है। चीन और तुर्किये उधार पर भी मदद कर सकते हैं। फिलहाल भारत के पास सटीक मौका था। लड़ाई का ऐसा मोर्चा निकट भविष्य में बनना असंभव है। इस बार पाकिस्तान की सेना को छिन्न-भिन्न किया जा सकता था। बल्कि उसे सेनाविहीन की स्थिति में लाया जा सकता था। पाकिस्तान जैसे आतंकी और गैर-जिम्मेदाराना देश से 'परमाणु शक्ति' छीनने के प्रयास भी किए जा सकते थे। 'इस्लामी परमाणु बम' की अवधारणा के खिलाफ भारत विश्व-मत तैयार कर सकता था। एक सिरफिरा और आत्मा से 'रक्तबीज' जैसा देश कभी भी परमाणु हथियारों का दुरुपयोग कर सकता है। भारत ऐसी भूमिका से वंचित रहा। भारत यह टकराव जीत कर भी विजेता नहीं बन सका। हम युद्धोन्मादी, युद्ध के पक्षधर नहीं हैं, लेकिन ऐसे अवसर को खोया भी नहीं जा सकता। पाकिस्तान आतंकिस्तान है।

इसे कहते हैं सेना को युद्ध की भट्टी में झोंकना !

संजय पराते

जब बिना किसी सुविचारित नीति के चुनाव को नजर में रखकर युद्धोन्माद फैलाया जाता है और फिर जनता को संतुष्ट करने और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को मजबूत करने के लिए युद्ध की 'रचना' की जाती है, तो उसका वही हश्र होता है, जो कल हमें दिखा। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद पूरे देश में युद्ध और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का जो वातावरण बनाया गया, उसमें पाकिस्तान पर 'सीमित हमला' करना जरूरी था, वरना भाजपा के घरेलू चुनाव के मोर्चे पर मात खाने की उम्मीद बन रही थी। गोदी मीडिया द्वारा इस सीमित हमले को इस तरह दिखाया गया कि अब दुनिया के नक्शे से पाकिस्तान का नाम ही मिटने वाला है और पाक हुक्मरान दया की भीख मांग रहे हैं। मीडिया ने कराची और पेशावर तक चढ़ाई कर दी थी कि अमेरिका ने युद्ध विराम का फैसला सुना दिया और भारत ने उसे एक अच्छे बच्चे की तरह मान लिया। लेकिन फिर खबर आई कि पाकिस्तान ने अमेरिका-प्रायोजित इस युद्ध विराम का भी उल्लंघन कर दिया है। सेना की सर्वोच्च अधिकारी राष्ट्रपति मौन है, प्रधानमंत्री आम जनता से नजरें चुरा रहे हैं। उधर पाकिस्तानी हुक्मरान संसद से मुखातिब है और वहां भारत की हार का जश्न मनाया जा रहा है। कश्मीर का जो मामला वर्ष 1971 के बाद से आज तक द्विपक्षीय बना हुआ था, अब उसके अंतर्राष्ट्रीय बनने की संभावना बलवती हो गई है। भारत-पाक के किसी युद्ध में या झड़प में भारत की ऐसी हास्यास्पद स्थिति कभी नहीं हुई, जैसी आज हो रही है। आम जनता यह सवाल पूछ रही है कि आखिर इस युद्ध से भारत को क्या हासिल हुआ? असली सवाल यही है कि इस सीमित युद्ध से और जब पाकिस्तान पर भारत हर दृष्टि से हावी था, युद्धविराम करके भारत को हासिल क्या हुआ? भारत को हासिल क्या हुआ, यह सवाल पहली बार नहीं पूछा जा रहा है? उस समय भी पूछा गया था, जब नोटबंदी की गई थी। तब बताया गया था कि इससे आतंकवाद की कमर टूट जाएगी। पता चल रहा है कि नोटबंदी के बाद आतंकवाद और मजबूत हो गया है कि हमारी ही कमर तोड़ रहा है। जब कश्मीर का विशेष दर्जा खत्म करके उसे टुकड़ों में बांटा गया, तब भी यही कहा गया कि इससे आतंकवाद खत्म हो जाएगा, लेकिन आतंकी हमले रुके नहीं। इस आतंकी हमले ने पहलगाम में कश्मीरियों पर भी हमला किया, उनकी भी शहादतें लीं। पाक-प्रायोजित आतंकियों ने पर्यटकों का धर्म पूछकर उन्हें मारा, ताकि आतंकवाद के धर्म को दिखाया जा सकें, लेकिन कश्मीर की हिंदू-मुस्लिम जनता ने एकजुटता के साथ यह दिखा दिया कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। आतंक केवल आतंक होता है, बस! इसलिए आम जनता यह सवाल पूछ रही है कि आखिर इस युद्ध से भारत को क्या हासिल हुआ? यह सवाल जायज भी है, क्योंकि बिहार की धरती से हमारे प्रधानमंत्री ने कसम खाई थी कि "आतंकियों को मिट्टी में मिला देंगे।" इस सीमित युद्ध के दौरान बताया जा रहा था कि आतंकियों के ठिकानों को नेस्तनाबूद किया जा रहा है, ताकि कोई इस देश में घुसकर आतंकी हरकत करने की हिम्मत न कर पाए। पाकिस्तान में 40 से ज्यादा शिविर हैं, जहां आतंकवादियों को प्रशिक्षित किया जाता है, उन्हें पाला-पोसा जाता है। खबरों के अनुसार, 8-10 शिविर नष्ट हुए हैं। बाकी को क्यों छोड़ दिया गया, किसके कहने पर छोड़ा गया, यह सब जानने का अधिकार जनता का नहीं है? बचे हुए आतंकी शिविर क्या अमेरिका में आतंक फैलाने का काम करते हैं, जिससे निपटने की जिम्मेदारी अमेरिका पर छोड़ दी गई है? मोदी सरकार ने जिस सीमित लक्ष्य के साथ यह युद्ध छेड़ा था, उसे भी प्राप्त करने में असफल रही है। यह हमारी युद्ध नीति की भी असफलता है और कूटनीति की भी। और यह असफलता क्यों हैं? इसलिए कि घरेलू मोर्चे पर मोदी सरकार आजादी के बाद की सबसे ज्यादा असफल सरकार साबित हुई है, जिसने घरेलू समस्याओं को हल करने के बजाए, आम जनता का ध्यान इससे हटाने के लिए हर मौके पर विभाजनकारी नीतियां अपनाई और लगातार सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के जरिए चुनाव जीतने और सत्ता में बने रहने को अपना एकमात्र लक्ष्य बना लिया है। देश विरोधी ताकतें भी इसका फायदा उठाने में लगी है, जो पहलगाम में आतंकी हमले से सही साबित होता है। ये ताकतें चाहती थी कि सांप्रदायिक आधार पर पहले से ही विभाजित भारतीय समाज और ज्यादा ध्रुवीकृत हो। उन्हें इसमें कामयाबी भी मिली, जब प्रधानमंत्री कश्मीर जाने के बजाए, दो-दो सर्वदलीय बैठक में जाकर विचार-विमर्श करने के बजाए, बिहार जाकर इसे चुनावी मुद्दा बनाते हैं और संघी गिरोह पूरे देश भर में मुस्लिमों पर हमला करके हिंदुओं की शहादत का बदला लेता है।युद्ध की परिस्थितियों में सरकार और सत्ताधारी पार्टी की जिम्मेदारी पूरे देश को एकजुट करने की होती है, इसके बजाय वह देश को और विभाजित करने का काम कर रही थी। इस सबके बावजूद, पूरा विपक्ष और पूरा देश सरकार के साथ एकजुट था कि वह इस आतंकी हमले का प्रतिकार करने के लिए किसी भी प्रकार का कदम उठाने को स्वतंत्र है। मोदी सरकार ने कूटनीति के जरिए पाकिस्तान की घेराबंदी करने के बजाए, युद्धनीति को प्राथमिकता दी। पहलगाम में आतंकवादी हमले की अभी तक मोदी सरकार ने साफ साफ जिम्मेदारी नहीं ली है। बैसरन घाटी में सुरक्षा बलों की अनुपस्थिति के बारे में सर्वदलीय बैठक में उसने जो सफाई दी है, वह गले उतरने लायक नहीं है और उसकी इस सफाई पर प्रश्नचिन्ह भी लग चुके हैं। आम जन मानस में यह सवाल भी तैर रहा है कि हर चुनाव के पहले ही आतंकी हमले क्यों होते हैं और इसकी आड़ में एक धार्मिक समुदाय को निशाने पर लेकर युद्धोन्मादी वातावरण क्यों बनाया जाता है? जिस तरह पहले की आतंकी घटनाओं की कोई विश्वसनीय जांच रिपोर्ट सामने नहीं आई हैं, पहलगाम की घटना के भी कोई तथ्य सामने नहीं आने वाले हैं। अब अगला सवाल यह है कि इस सीमित युद्ध का जो हश्र हुआ, क्या उसकी ही कोई जिम्मेदारी मोदी सरकार लेने के लिए तैयार है? इस युद्ध विराम से पहले हमारी सेना को भी विश्वास में लिया गया है, ऐसा भी नहीं लगता। यह हमारी सेना के शौर्य और सैनिकों की शहादत का अपमान नहीं, तो और क्या है!आज तक हम इस नीति का पालन कर रहे थे कि भारत और पाकिस्तान के बीच का कोई भी विवादित मुद्दा हमारा आपसी मामला है और दोनों देश आपसी संवाद के जरिए कश्मीर सहित सभी मुद्दों को सुलझा सकते हैं। शिमला समझौते की भावना भी यही है। पाकिस्तान ने बार-बार इस समझदारी का उल्लंघन किया है, लेकिन उसे कभी सफलता नहीं मिली और हमारी सरकार की सफल कूटनीति ने विश्व जनमत को हमारे पक्ष में बनाए रखा।लेकिन वर्ष 1971 के बाद यह पहली बार हो रहा है कि भारत-पाक विवाद का हल अमेरिका की मध्यस्थता में खोजा जा रहा है। यह आश्चर्य की बात है कि युद्ध विराम की घोषणा भारत या पाकिस्तान नहीं, अमेरिका करता है। पाकिस्तान इसकी मीडिया में पुष्टि करता है और भारत दबी जुबान "ऐसा नहीं" कहने पर मजबूर है, लेकिन अमेरिका की मध्यस्थता का खंडन करने की हिम्मत नहीं करता। अमेरिका ही यह घोषणा भी करता है कि "दोनों पक्ष बड़े मुद्दों पर किसी तटस्थ स्थल पर वार्ता के लिए सहमत हो गए हैं।" अब यह बड़ा मुद्दा कश्मीर के सिवा और क्या हो सकता है? यह स्पष्ट नहीं है कि "किसी तटस्थ स्थल" पर अमेरिका की मौजूदगी होगी या नहीं? लेकिन संचार-प्रौद्योगिकी के इस युग में अमेरिका की भौतिक उपस्थिति कोई मायने नहीं रखती। युद्ध विराम में मध्यस्थता और बड़े मुद्दों पर वार्ता की अमेरिका की घोषणा से ही जाहिर है कि अब भविष्य में कश्मीर मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण होने जा रहा है, जो पाकिस्तान के मन-माफिक है। इसलिए युद्ध विराम की अमेरिकी घोषणा को पाकिस्तान अपनी जीत और भारत की हार बता रहा है, तो इसमें गलत क्या है? अमेरिका चाहता तो पाक प्रायोजित आतंकवाद पर लगाम लगा सकता था। लेकिन अमेरिका ही है, जो पूरी दुनिया में आतंकवाद का निर्यात करता है और आतंकवादियों को पनाह भी देता है। पाकिस्तान के राजनेताओं ने भी, जो जब-तब सत्ता में भी रहे हैं, यह माना है कि उनकी जमीन पर आतंकवाद अमेरिका के इशारे पर और उसके हितों के लिए पाला-पोसा गया है। इसलिए भारत में आतंकवाद केवल पाक-प्रायोजित ही नहीं है, अमेरिका-समर्थित आतंकवाद भी है। इसलिए पाकिस्तान के खिलाफ लड़ना जितना जरूरी है, उससे ज्यादा जरूरी आतंकवाद के सरगना अमेरिका के खिलाफ लड़ना है। लेकिन मोदी सरकार के पास बाबर और औरंगजेब के औलादों के खिलाफ लड़ने की ताकत तो है, अमेरिका के खिलाफ चूं तक करने की हिम्मत नहीं है। जब अमेरिका हमारे प्रवासी देशवासियों को जंजीर से जकड़कर हमारी ही धरती पर पटक रहा था, तो इस अपमान के खिलाफ मोदी सरकार की न केवल घिग्घी बंधी हुई थी, बल्कि संसद के अंदर उसने अमेरिका के इस कुकृत्य को सही भी ठहराया था, जबकि पूरी दुनिया अमेरिका की इस दादागिरी के खिलाफ लड़ रही थी। इसलिए इस सीजफायर के लिए मध्यस्थता कर रहे अमेरिका की किन शर्तों को भारत ने माना है, इसका भी खुलासा उसे आम जनता के सामने करना चाहिए। दो देशों के बीच का युद्ध वास्तव में उन देशों की सत्ताधारी पार्टियों और शासक वर्ग के बीच का युद्ध होता है, जिसमें जनता को सुनियोजित रूप से खींचा जाता है। आजादी के बाद से ही भारतीयों के मन में पाकिस्तानी जनता के खिलाफ और पाकिस्तानियों के मन में भारतीय जनता के खिलाफ नफरत पैदा करने का काम होता रहा है। भारत-पाक के इस सीमित युद्ध के जरिए दोनों देशों के सत्ताधारियों के हित साधे गए हैं। पाकिस्तान में सैन्य शासकों ने वैधता प्राप्त करने की कोशिश की है, तो भारत में मोदी सरकार ने बिहार चुनाव को साधने की। वास्तव में तो सेना को, उसकी इच्छा-अनिच्छा के परे, युद्ध की भट्टी में ही झोंकने का काम किया गया है। वह एक लोकतांत्रिक सरकार के अधीन अपना सैन्य कर्तव्य ही पूरा कर रही थी। अमेरिका की मध्यस्थता में हुए इस युद्ध विराम ने वास्तव में भारतमाता के माथे के सिंदूर को थोड़ा-सा और पोंछने का ही काम किया है।*(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं)

दूषित नदियों से सेहत के बढ़ते खतरे

विजय गर्ग

र्तमान युग को पर्यावरणीय संकट का युग कहा ाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। विकास, हरीकरण, उद्योगीकरण और बढ़ती जनसंख्या के बाव ने प्राकृतिक संसाधनों पर जो बोझ डाला है, सका परिणाम आज हमारे सामने साफ दिखाई दे । जल संसाधनों का संकट भी इन्हीं समस्याओं ा विकराल रूप है। भारत की संस्कृति और भ्यता नदियों के किनारे विकसित हुई, लेकिन ाज वह नदियों के अस्तित्व को बचाने के लिए ूझ रहा है। कनाडा के शोधकर्ताओं ने हाल ही में काशित एक अध्ययन में भारत की नदियों के ंदर्भ में चिंताजनक स्थिति उजागर की है। अध्ययन े अनुसार भारत की लगभग अस्सी फीसद नदियां दूषण के कारण गंभीर पर्यावरणीय और स्वास्थ्य ंकट का सामना कर रही हैं। इस शोध में 72 के 77 नदी स्थलों 21 सामान्य एंटीबायोटिक की ौजूदगी का परीक्षण किया और पाया गया कि ारत, पाकिस्तान, नाइजीरिया, इथियोपिया और यतनाम जैसे देशों में स्थिति बेहद भयावह है। टीबायोटिक प्रदूषण का अर्थ है- मानव, पशु चिकित्सा या कृषि में प्रयुक्त दवाइयों के अंशों का नियंत्रित, अनियमित एवं अनावश्यक रूप से र्यावरण में उत्सर्जित होना । जब ये अंश जल, मृदा या वायु में प्रवेश करते हैं, तो ये केवल स्थलीय जीवन को नहीं, जलीय और समग्र पारिस्थितिकी तंत्र को भी प्रभावित करते हैं। भारत में विशेष रूप से कई दवाओं के अत्यधिक स्तर पाए गए हैं। इनमें से 'सेफिक्सिम' की उपस्थिति भारतीय नदियों में व्यापक पाई गई है। ये तथ्य स्वयं इस बात की पुष्टि कही हैं। वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के करते हैं कि एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग और निपटान में गंभीर त्रुटियां हो अनुसार, भारत में लगभग 31.5 करोड़ लोग ऐसे क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं, जहां जलस्रोत एंटीबायोटिक अवशेषों से प्रभावित हैं। यह तथ्य अत्यंत गंभीर है क्योंकि दूषित जल मानव स्वास्थ्य के लिए प्रत्यक्ष खतरा उत्पन्न करता है। दिल्ली, लखन, गोवा और चेन्नई जैसे प्रमुख महानगरों में नदियों के जल में एंटीबायोटिक दवाओं की सांद्रता विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित सुरक्षित सीमा से दो से पांच गुना अधिक पाई गई है। इस संदर्भ में यह समझना आवश्यक है कि जल में उपास है कि जल में उपस्थित एंटीबायोटिक अवशेष सीधे तौर पर न

केवल मानव जीवन, बल्कि जलीय जीव-जंतुओं, सूक्ष्मजीवों और संपूर्ण खाद्य श्रृंखला को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण में एंटीबायोटिक पोटिक प्रदूषण के विविध स्रोत हैं। प्रमुख औषधि उद्योगों से उत्पन्न अपशिष्ट जल शामिल है, जिसे उपचारित किए बिना जल स्रोतों में प्रवाहित कर दिया जाता है। भारत में अनेक औषध निर्माण इकाइयां पर्यावरणीय मानकों का उल्लंघन करते हुए अपशिष्ट जल को नदियों, में मिलाती हैं। इसके अलावा मानव तथा पशु चिकित्सा में एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक तथा अनियंत्रित उपयोग भी इस संकट का बड़ा कारण है। अक्सर देखा जाता है कि बिना चिकित्सक के परामर्श के ही दवाइयां खरीदी जाती हैं और स्व-चिकित्सा की प्रवृत्ति आम हो चली है। इसके कारण न केवल दवाओं का अनावश्यक सेवन बढ़ता है, बल्कि इनके अवशेष शरीर से बाहर निकल कर जल स्रोतों को भी दूषित करते हैं। पशुपालन और कृषि क्षेत्र में भी वृद्धि दर बढ़ाने और बीमारियों से सुरक्षा के लिए एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक उपयोग होता है। इसके परिणामस्वरूप मृदा तथा जल प्रदूषित होते हैं। एंटीबायोटिक प्रदूषण के दुष्परिणाम अत्यंत व्यापक हैं। जब जल स्रोतों में एंटीबायोटिक अवशेषों की अधिकता होती है, तो सूक्ष्मजीवी समुदायों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखने में सूक्ष्मजीवों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इनके असंतुलन से संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हो सकता है। जलीय जीवों की प्रजातियां, विशेष कर मछलियां झींगे आदि, एंटीबायोटिक प्रदूषण के प्रति अत्यंत संवेदनशील होती हैं। इससे उनकी जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो दीर्घकाल में खाद्य श्रृंखला को भी प्रभावित करता है। मानव स्वास्थ्य पर भी इसके दुष्प्रभाव अत्यंत गंभीर हैं। एंटीबायोटिक अवशेषों के निरंतर संपर्क से जलजनित रोगों का खतरा बढ़ जाता है। दूषित जल के सेवन या उससे सिंचित फसलों के माध्यम से मानव शरीर में एंटीबायोटिक के प्रवेश कर कर सकते हैं, जिससे आंतों के संक्रमण, एलर्जी, प्रतिरक्षा तंत्र की दुर्बलता, यकृत तथा गुर्दे की समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। सबसे गंभीर प्रभाव एंटीबायोटिक प्रतिरोध के रूप में सामने आता है। जब जीवाणु निरंतर एंटीबायोटिक दवाओं के के संपर्क में रहते हैं, तो वे उनके विरुद्ध प्रतिरोधी बन जाते हैं, जिससे सामान्य संक्रमणों का उपचार कठिन हो जाता है। वर्तमान में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एंटीबायोटिक प्रतिरोध को वैश्विक स्वास्थ्य संकटों में से एक घोषित किया है। भारत में प्रतिवर्ष लगभग अट्ठावन हजार नवजात शिशुओं की मृत्यु इसी कारण हो रही। इस संकट की गंभीरता को रेखांकित करता है। कृषि पर भी इस संकट का सीधा प्रभाव पड़ रहा । इस प्रकार एंटीबायोटिक प्रदूषण केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं, अपितु आर्थिक एवं सामाजिक समस्या भी बन चुका है, जिसका समाधान तत्काल आवश्यक है। भारत सरकार ने इस दिशा में कुछ प्रयास किए गए हैं।

(विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब)

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक , प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई -37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

एक नजर

ट्रांसफार्मर खराब रहने से भलार गांव मे बिजली गुल

दिव्य दिनकर संवाददाता

धरहरा। धरहरा प्रखंड क्षेत्र के भलार गांव के विद्युत उपभोक्ताओं को इस भीषण और तपिश भरी गर्मी में बिना बिजली के जीने को मजबूर होना पड़ रहा है। प्रचंड गर्मी मे भलार गांव की बिजली गुल रहने से उपभोक्ता परेशान है। उपभोक्ताओ ने बताया कि हरिजन टोला का ट्रांसफार्मर एक माह पूर्व जल गया। उक्त टोला के सभी कंज्यूमर का कनेक्शन शर्मा टोला स्थित ट्रांसफार्मर मे कर दिया गया। ज्यादा लोड पड़ने के कारण यह ट्रांसफार्मर भी खराब हो गया। स्थिति यह है कि जब इसकी शिकायत विद्युत विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारी बाबू को करते है तो वह फोन तक नही उठाते है। इस बात को लेकर स्थानीय लोगो मे आक्रोश है। प्रेम मोहन सिंह, बिरजू सिंह, शेखर सिंह धोनी सहित दर्जनों उपभोक्ताओं ने समस्या का यथाशीघ्र निदान नही किए जाने पर जन आंदोलन की चेतावनी दी। बात विद्युत विभाग के करें तो विद्युत विभाग के अधिकारी उपभोक्ताओं की आम समस्याओं के प्रति इस कदर उदासीन रवैया अपनाते हैं जैसे उन्हें विद्युत उपभोक्ताओं से महज बकाया बिजली बिल वसूलने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। कई ट्रांसफार्मर में लगे उपकरणों की निम्न गुणवत्ता के कारण आए दिन ट्रांसफार्मर में गर्मी के दिनों में लोड बढ़ते ही ट्रांसफार्मर में छोटी-मोटी समस्याएं आने लगती है। जिसके ऊपर समय रहते ध्यान नहीं दिए जाने के कारण अंततः ट्रांसफार्मर ओवरलोड के कारण जल जाता है। विद्युत विभाग के अधिकारियों की लापरवाही के कारण आम विद्युत उपभोक्ताओं को परेशानियां उठानी पड़ती है।

चेक बाउंस मामले का निष्पादन किया गया

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष सह प्रधान जिला जज राजकुमार वन और सचिव न्यायधीश तान्या पटेल ने कहा कि राष्ट्रीय लोक अदालत में चेक बाउंस के मामले का निष्पादन में पक्षकारों को ओर अधिक रूचि लेने की जरूरत है, ताकि उनकी वित्तीय लेनदेन की समस्या का अधिक से अधिक निष्पादन हो , अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि इस बार व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में राष्ट्रीय लोक अदालत में एसिजेएम सप्तम कोर्ट के चेक बाउंस वाद के अभियोग संख्या -983/13 दोनों पक्षों के सहमति से निष्पादन कराया गया है,इस वाद के सुचक सुधीर कुमार सिंह शिवाजी पथ शक्ति नगर औरंगाबाद ने चेकवाउस मामले में नौरंजन पॉजा अकुई इन्दास बांकुड़ बंगाल पर केस दर्ज कराई जिसमें कहा था कि अपने मिल से गल्ले के खरिद बिक्री में 6 लाख 60 हजार बकाया था नौरंजन पॉजा ने दो चेक दिया था जो वाउंस हो गया था, वहीं एक दुसरे विकास कुमार कोर्ट के वाद संख्या -456/22 में अभियोगी अनील कुमार आजन मदनपुर ने 8 लाख पचास हजार लेकर अभियुक्त के चेक से पैसा भुगतान नहीं होने पर चेक बाउंस का केस 31/05/22 को युगेश प्रसाद वर्मा दधपी मदनपुर पर किया था, दोनों पक्षों को सूलह समझौता होने पर राष्ट्रीय लोक अदालत में निष्पादन कराया गया है, दोनों पक्षों ने खुशी जताई है।

आदर्श विवाह जागरुकता समारोह की तैयारी पूरी किया गया - सिद्धेश्वर विद्यार्थी

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले में आदर्श विवाह जागरुकता समारोह की तैयारी पूरी किया गया - सिद्धेश्वर विद्यार्थी। बताते चलें कि इस समारोह कार्यक्रम की तैयारी समिक्षा बैठक के दौरान सामने आई। बैठक जनेश्वर विकास केंद्र के अध्यक्ष रामजी सिंह की अध्यक्षता और कार्यक्रम संयोजक आदित्य श्रीवास्तव के संचालन में संपन्न हुई। जनेश्वर विकास केन्द्र के सचिव सिद्धेश्वर विद्यार्थी ने बताया कि समिक्षा के अनुसार समारोह का उद्घाटन 13 मई को 2 बजे सिन्हा कालेज के प्रिंसिपल श्री सुधीर कुमार मिश्रा, पंचदेव धाम के संस्थापक श्री अशोक कुमार सिंह एवं आर एन ग्रुप औफ इंस्टीट्यूशन के निदेशक श्री शंभू पांडेय के हाथों किया जाएगा । तत्पश्चात ₹ दें दिया घर की दीया, फिर भी कहते क्या दियाऱ विषय पर संगोष्ठी आयोजित किया जाएगा । इसके मुख्य वक्ता के रूप में संपादक डा सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा, प्रो दिनेश प्रसाद, प्रो संजीव रंजन, कवि लवकुश प्रसाद सिंह, विधि संघ के पूर्व अध्यक्ष रसिक बिहारी सिंह , अधिवक्ता संघ अध्यक्ष संजय सिंह सहित जिले के नामचीन हस्तियां होंगे। इसके बाद पारंपरिक विवाह गीत प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी। इसके तहत पुराने और परंपरा से जुड़े गीतों को शामिल किया जाएगा । चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा । अंत में बिना ताम-झाम और दहेज रहित आदर्श विवाह करने वाले जोड़ों को सम्मानित किया जाना है । इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दहेज रुपी दानव को समाप्त करने का प्रयास है । दहेज के कारण आज बेटियां उपेक्षित है । बैठक में प्रो संजीव रंजन, कवि लवकुश प्रसाद सिंह, साहित्य संवाद सचिव उज्जवल रंजन ,प्रो दिनेश प्रसाद, साहित्य संवाद संयोजक लालदेव प्रसाद, सामाजिक कार्यकर्ता प्रमोद कुमार सिंह , कला कौशल के संयोजक आदित्य श्रीवास्तव उपस्थित थे।

कैथी नहर मोड़ पर दर्दनाक हादसा,यात्री शेड में घुसी तेज रफ्तार स्कॉर्पियो

चालक की मौत, महिला गंभीर रूप से घायल पटना रेफर

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह (औरंगाबाद)। गोह थाना क्षेत्र के कैथी नहर के समीप स्थित यात्री शेड में सोमवार की अपराह्न करीब ढाई बजे एक तेज रफ्तार स्कॉर्पियो के जबरदस्त टक्कर मारने से मौके पर ही चालक की मौत हो गई, जबकि वाहन में सवार महिला गंभीर रूप से घायल हो गईं। मृतक की पहचान भोजपुर जिले के नासरीगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत तारा गांव निवासी 47 वर्षीय बिनोद राम, पिता हरी बंस राम के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलते ही डायल 112 की पुलिस मौके पर पहुंची और गंभीर रूप से घायल महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोह ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उन्हें पटना रेफर कर दिया। शादी में शामिल होकर लौट रही थी महिला जानकारी देते हुए मलहद निवासी पूर्व पैक्स अध्यक्ष मंटू शर्मा ने बताया की नासरीगंज थाना क्षेत्र के धोबडीहा गांव निवासी हरेंद्र तिवारी की पत्नी पूनम देवी नौ मई को अपने मामा कृष्णनंदन शर्मा के घर मलहद गांव शादी समारोह में शामिल होने आई थीं। उनकी पुत्री की शादी दस मई को थी। कार्यक्रम में शामिल होने के बाद सोमवार को पूनम देवी चालक बिनोद राम के साथ स्कॉर्पियो से वापस लौट रही थीं। तेज रफ्तार बनी हादसे की वजह पूनम देवी ने बताया कि चालक स्कॉर्पियो को बहुत तेज गति से चला रहा

था। उन्होंने बार-बार गाड़ी की रफ्तार कम करने को कहा, लेकिन चालक नहीं माना। जैसे ही वाहन कैथी नहर मोड़ के पास पहुंचा, स्कॉर्पियो सीधे यात्री शेड में जा घुसी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि यात्री शेड की छत उखड़कर वाहन पर गिर गई, जिससे चालक की मौके पर ही मौत हो गई। जेसीबी से निकाला गया मलबे में दबा वाहन घटना के बाद आसपास के ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई। गोह थाना अध्यक्ष मो. इरशाद ने बताया कि पहले ट्रैक्टर की मदद से मलबे में दबे वाहन को निकालने की कोशिश की गई, लेकिन सफलता नहीं मिली। इसके बाद जेसीबी मंगाकर मलबा हटाया गया और स्कॉर्पियो को बाहर निकाला गया। मौके पर पहुंचे एसआई रविन्द्र कुमार और रंजीत कुमार ने कागजी प्रक्रिया पूरी कर शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल औरंगाबाद भेज दिया। हादसे के बाद क्षेत्र में मातम का माहौल है।

अष्टभुजी धाम पिपरा को पर्यटन स्थल का दर्जा दिलाने का भरपूर प्रयास करुंगा नबीनगर विधायक- विजय कुमार सिंह उर्फ डब्लू सिंह

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के बारुण प्रखंड के मशहूर ग्राम पिपरा में अवस्थित अष्टभुजी माता मंदिर के प्रांगण में अष्टभुजी महोत्सव की शरूआत सुबह-सबेरे योग्य आचार्यों के वेद मंत्रोंच्चार के साथ की गई। अष्टभुजी महोत्सव समिति के आयोजित कार्यक्रम में अखिलेश मिश्रा नीरज मिश्रा द्वारा विशेष पूजा अर्चना कराई गई। षोडशोपचार विधि से पूजा अर्चना में यजमान के रूप में सुधीर पाल,अक्षय लाल गुप्ता, कुंदन भगत ने सराहनीय भूमिका निभाई। उसके बाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित नवीनगर के वर्तमान विधायक विजय कुमार सिंह उर्फ डब्ल्यू बाबू जदयू के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुनिल कुमार,डॉ चंदन कुमार, मुखिया प्रतिनिधि प्रदीप कुमार सिंह, प्रोफेसर विजय कुमार सिंह चुलबुल सिंह, सत्यचंडी धाम महोत्सव के अध्यक्ष राजेंद्र सिंह,जिप प्रतिनिधि सत्येंद्र कुमार सिंह, हम के राष्ट्रीय महामंत्री सुनील चौबे आयोजन

समिति के अध्यक्ष विजय कुमार सिंह, उपाध्यक्ष अजय कुमार, कोषाध्यक्ष रामेश्वर भगत,आलोक गुप्ता,संरक्षक अजीत मिश्रा, संयोजक सुरेश विद्यार्थी एवं अन्य लोगों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। सभी अतिथियों को आयोजन समिति द्वारा पुष्प गुच्छ अंग वस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। विजन क्लासेस के बच्चों द्वारा स्वागत गान की प्रस्तुति की गई। प्रदेश जदयू के वरीय नेता सुनील सिंह ने अपने संबोधन के क्रम में कहा कि शक्ति की पूजा बहुत ही प्राचीन है। बुद्ध पूर्णिमा के मौके पर महात्मा बुद्ध की कहानी भी सुनाई। मुख्य अतिथि डब्लू बाबू ने कहा कि अष्टभुजी धाम को हम पर्यटक स्थल का दर्जा दिलाने का भरपूर प्रयास करुंगा। हमसे जितना संभव हो सकेगा हम इस स्थल को अपनी ओर से विकास करने का प्रयास करूंगा यह भी कहा कि मीडिया कर्मी लोग इस स्थल का जितना हो सके प्रचार कर सके तभी स्थल का अपेक्षित विकास होगा प्रोफेसर विजय कुमार सिंह ने इस स्थल की प्राचीनता की चर्चा की। मुखिया प्रतिनिधि प्रदीप कुमार सिंह ने अष्टभुजी माता के उपासना को शक्ति उपासना का सर्वोपरि माध्यम बताया।तत्पश्चात विद्यालयी बच्चों का कार्यक्रम की शुरूआत की गई।विजन इंटर क्लासेस के डायरेक्टर आनंद कुमार के नेतृत्व में विद्यालयी बच्चों ने एक से एक बढ़कर प्रस्तुति दी।अष्टभुजी माता पर आधारित गीत प्रस्तुत किए गए हैं ए गिरी नंदिनी गीत की प्रस्तुति की गई दहेज गीत की प्रस्तुति की गई।सामूहिक नृत्य एवं एकल नृत्यकी शानदार प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता विजय कुमार सिंह ने की जबकि संचालन की जिम्मेवारी पूर्व प्रधानाध्यापक राम प्रताप भारती ने निभाई। विभिन्न महोत्सव के आयोजकों को अंग वस्त्र मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। मौके पर नीतीश पांडेय, पैक्स अध्यक्ष नरेंद्र पांडेय,पूर्व मुखिया रमेश कुमार सिंह पंचायत समिति सदस्य सुनील यादव, शक्ति मिश्रा फाउंडेशन के अध्यक्ष शक्ति मिश्रा सौनोरा पैक्स के अध्यक्ष चंदन कुमार सिंह मधुसूदन त्रिवेदी सहित अन्य उपस्थित थे।

भाजपा के पूर्व विधायक अनिल सिंह पर प्राथमिकी

नवादा, ।नवादा नगर थाने में सोमवार को हिसुआ के भाजपा के पूर्व विधायक अनिल सिंह पर एक भाजपा कार्यकता ने लात घुसे से मारपीट और अभद्र व्यवहार करने का आरोप लगाया है ।पीड़ित भाजपा कार्यकर्ता सह सोशल मीडिया क्षेत्रीय प्रभारी अविनाश कुमार ने इस घटना की लिखित शिकायत नगर थाना की पुलिस से कर पुलिस प्रशासन से जान माल की सुरक्षा की गुहार लगाया था. जिस पर सोमवार को प्राथमिकी दर्ज की गयी है। नगर थाना की पुलिस को दिए गए लिखित शिकायत में भाजपा कार्यकर्ता वारसलीगंज थाना क्षेत्र के कोचगाँव के निवासी राजनीति सिंह के पुत्र अविनाश कुमार ने बताया है कि 8 मई को संध्या 5 बजे अपने साथी के साथ परिषद नवादा में मंत्री जीवेश मिश्रा से मिलने गए थे,जहां हिसुआ के पूर्व विधायक अनिल सिंह और उनके सहयोगी बगोदर हिसुआ के निवासी मुरारी सिंह और चितरंजन कुमार एवं पकड़िया गांव के संतोष

कुमारगाली गलौज कर लात घुसे से मारपीट करने लगे । जान से मारने की धमकी दी गई । कार्यकर्ता अविनाश कुमार ने पुलिस को दिए गए लिखित शिकायत में यह भी बताया है कि भविष्य में हमारी जान माल का कोई नुकसान होता है तो इसके जिम्मेवार हिसुआ के पूर्व विधायक अनिल सिंह एवं उनके सहयोगी मुरारी सिंह ,चितरंजन कुमार और संतोष कुमार होंगे। फिलहाल इस घटना के बाद नगर थाना की पुलिस हिसुआ के पूर्व विधायक अनिल सिंह पर प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच में जुट गई है।

रक्सौल बॉर्डर से 13 वर्षीय नाबालिग लड़की की मानव तस्करी की कोशिश नाकाम

-नेपाली युवक गिरफ्तार

पूर्वी चंपारण,)। भारत-नेपाल के रक्सौल बार्डर से मानव तस्करी की एक बड़ी कोशिश को एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग टीम ने नाकाम कर दिया गया। सोशल मीडिया के जरिए दोस्ती कर एक नेपाली युवक 13 वर्षीय नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर नेपाल ले जाने की कोशिश कर रहा था लेकिन एसएसबी 47वीं बटालियन की एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग टीम, प्रयास जुवेनाइल एड सेंटर पूर्वी चंपारण और न्याय नेटवर्क परियोजना की संयुक्त कार्रवाई में आरोपी युवक को रक्सौल बॉर्डर के पास इंडियन ऑयल डिपो से गिरफ्तार कर लिया गया। गुप्त सूचना के आधार पर संयुक्त टीम ने

बॉर्डर के पास संदिग्ध हालत में एक युवक और नाबालिग लड़की को पकड़ा। काउंसलिंग के दौरान लड़की ने बताया कि कुछ दिनों से सोशल मीडिया के माध्यम से युवक से उसकी बातचीत हो रही थी। युवक ने उसे घर से चुपचाप निकल कर घोड़ासहन स्टेशन आने को कहा था, जहां से ट्रेन द्वारा वह उसे रक्सौल लेकर आया और फिर नेपाल ले जाने की योजना थी। लड़की ने बताया कि यह उनकी पहली मुलाकात थी और युवक ने नेपाल में शादी कर नौकरी करने का सपना दिखाया था। लड़की घोड़ासहन थाना क्षेत्र की निवासी है और उसकी उम्र लगभग 13 वर्ष है। इस मामले में आरोपी युवक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है और आगे की जांच जारी है। मौके पर मौजूद टीम में एसएसबी इंस्पेक्टर विकास कुमार, अरविंद द्विवेदी, शिवांगी राज, जिला परियोजना समन्वयक आरती कुमारी, सामाजिक कार्यकर्ता राज गुप्ता, गौरव कुमार दास समेत अन्य सदस्य शामिल थे। इस प्रकार एसएसबी,पुलिस और सामाजिक संगठनों की सक्रियता से एक और मासूम की जिंदगी बचा ली गई है।

किसान महापंचायत आज और कल, दूसरे दिन शामिल होंगे सांसद राजाराम सिंह

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह (औरंगाबाद) हमीदनगर पुनपुन बराज परियोजना से प्रभावित किसानों की समस्याओं को लेकर अखिल भारतीय किसान सभा, अंचल कमिटी गोह के तत्वावधान में आज 13 व 14 मई को उपहारा थाना क्षेत्र के महेश परासी गांव में दो दिवसीय किसान महापंचायत का आयोजन किया गया है। इस दौरान कार्यक्रम के पहले दिन क्षेत्रीय किसान नेताओं द्वारा समस्याओं और मांगों पर चर्चा की जाएगी, जबकि दूसरे दिन कार-ाकाट के सांसद कामरेड राजाराम सिंह एवं किसान सभा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य कामरेड सरेश प्रसाद यादव व नेता श्याम सुंदर सभा को संबोधित करेंगे। महापंचायत की मुख्य मांगो मे सर्किल रेट से चार गुना अधिक मुआवजा दिया जाए।बकाश्त जमीन को रैयती घोषित किया जाए।बगीचों का मुआवजा उनकी आयु के अनुसार तय हो।जमीन की खरीद-बिक्री पर लगी रोक हटाई जाए।विस्थापित किसानों को पुनर्वासित किया जाए।किसान नेता श्याम सुंदर पर दर्ज फर्जी मुकदमा वापस लिया जाए।किसानों पर दमन करने वाले अधिकारियों को बर्खास्त किया जाए।लिफ्टिंग सिस्टम के माध्यम से सिंचाई की व्यवस्था की जाए।

दाउदनगर प्रखंड इकाई में प्रजापति समाज के कार्यकारिणी कमिटि का हुआ गठन

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- बिहार कुम्हार (प्रजापति) समन्वय समिति प्रखंड इकाई दाउदनगर में 11 मई 2025 दिन रविवार को प्रखंड अध्यक्ष श्री बिनोद कुमार प्रजापति जी बारुण रोड, दाउदनगर के आवास पर उनकी अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गयी। जिसमें उपस्थित सदस्यों में से प्रखंड स्तरीय कार्यकारिणी कमिटि का गठन किया गया। प्रखंड संरक्षक के रूप में श्री लाल बहादुर प्रजापति, संयोजक श्री अजय प्रजापति, प्रवक्ता डॉ अमरजीत प्रजापति, उपाध्यक्ष श्री उदय प्रजापति, संयुक्त सचिव श्री राजेन्द्र प्रजापति, संगठन सचिव धर्मेन्द्र पंडित, युवा प्रखंड अध्यक्ष शिवपूजन प्रजापति, युवा प्रखंड सचिव चन्दन प्रजापति, महिला प्रखंड अध्यक्षा सोनिया कुमारी प्रजापति, महिला प्रखंड सचिव ममता देवी, प्रखंड कार्यालय सचिव राजदेव प्रजापति, सक्रिय सदस्य के रूप में कृष्णा प्रजापति, डॉ अजित कुमार प्रजापति, श महेंद्र प्रजापति, उमेश प्रजापति, गोपाल प्रजापति, नवल प्रजापति, उपेन्द्र प्रजापति, धिरेन्द्र प्रजापति, अनिल कुमार प्रजापति, चंद्रशेखर प्रजापति एवं सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में गोपाल प्रजापति, राजु प्रजापति, राधालाल प्रजापति, संतोष कुमार तथा रामा प्रजापति को सर्वसम्मति से चुना गया। साथ ही यह भी चर्चा हुई कि मिलर हाई स्कूल पटना में आगामी 25 मई 2025 को 'प्रजापति हुंकार रैली' को ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर सफल बनाने एवं चट्टानी एकता के साथ मजबूती प्रदान करने के लिए रूपरेखा तैयार किया जा सके। बैठक में प्रखंड सचिव गुप्तेश्वर प्रजापति, कोषाध्यक्ष लौकेश कुमार प्रजापति,अनुमंडलीय अध्यक्ष कृष्णा प्रजापति, प्रखंड मीडिया प्रभारी सुनील कुमार प्रजापति एवं अन्य सभी प्रजापति समाज के सदस्यगण उपस्थित रहे।

कम्युनिष्ट नेता और शिक्षक के जन्मदिन पर लगाया गया पौधा

रिपोर्ट - निशांत कुमार

हसपुरा (औरंगाबाद) :- हसपुरा प्रखंड में पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए अपने परिजनों के जन्मदिन, मृत्यु दिवस और शादी विवाह के अवसर पर पेंड लगाने के अभियान को गति दिया जा रहा है।इस अभियान के तहत हसपुरा प्रखंड के बंगाली बिगहा ग्राम में कम्युनिष्ट नेता और शिक्षक स्व. श्रवण कुमार सिंह के जन्मदिन पर चिक्कू का पौधा लगाया गया।इस अवसर पर नेहरू युवा केन्द्र के डिप्टी डायरेक्टर कपिलदेव राम ने कहा कि अपने पूर्वजों के सम्मान में पौधा लगाना सराहनीय कार्य है। वरिष्ठ साहित्यकार प्रो अलखदेव प्रसाद अचल ने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग से बचाव के लिए पेड़ लगाना जरूरी है।पर्यावरण तभी सन्तुलित होगा जब अधिक से अधिक पेंड लगाया जाएगा।इस अवसर पर शिक्षक अरविंद कुमार वर्मा,अभय कुमार,अरुण कुमार रंजन, कमाख्या नारायण सिंह,रामएकबाल सिंह ब्रजभूषण प्रसाद,सरस्वती देवी,तपेश्वरी सिंह ,शम्भू शरण सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

सरस्वती शिशु उच्च माध्यमिक विद्यालय औरंगाबाद में बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- मुख्यालय स्थित सूर्यमंदिर के नजदीक सरस्वती शिशु उच्च माध्यमिक विद्यालय में बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के अवसर पर विद्यालय परिसर में भव्य रूप से बुद्ध पूर्णिमा की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रभात फास्ट न्यूज के ब्यूरो चीफ एडिटर आलोक कुमार, प्रभारी प्रधानाचार्य श्री संजय कुमार सिंह जी, प्रधानाचार्य श्री नीरज कुमार कौशिक भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। बहन अदिति ने अध्यक्षता के साथ ने भगवान बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं पर आधारित भाषण प्रस्तुत किया । कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में शांति, संयम और करुणा जैसे जीवनमूल्यों का संचार करना रहा। कार्यक्रम का समापन प्रधानाचार्य द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस आयोजन ने विद्यालय में अध्यात्मिकता और सांस्कृतिक चेतना का संदेश प्रसारित किया।

सात वर्षीय बच्चे को परिजनों से मिलाया

एजेंसी

नई दिल्ली । पालम गांव थाना पुलिस ने घर का रास्ता भूले 7 वर्षीय बच्चे को परिजनों से मिलवाया है। बच्चा रास्ता भटक कर घर से काफी दूर निकल आया था। पुलिस टीम बच्चे के साथ विभिन्न इलाकों में घूमी। उसके फोटो ग्रुप में साझा किए गए। कड़ी मशक्कत के बाद बच्चे के माता पिता का पता लगाया गया।पुलिस अधिकारी के अनुसार 10 मई को पालम नगर थाने को सूचना मिली के एक बच्चा गली नंबर 6 राज नगर पार्ट 2 में लावारिस हालत में घूम रहा है। तत्काल पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर बच्चे को अपने कब्जे में लिया। उससे घर का पता पूछा गया तो वह सही जानकारी नहीं दे पाया। इसके बाद में पुलिस टीम ने इलाके की आरडब्ल्यूए व मार्केट एसोसिएशन से संपर्क किया। बच्चे का फोटो विभिन्न ग्रुप में साझा किया गया। जिस स्थान पर बच्चा मिला था वहां लगे सीसीटीवी कैमरों की भी जांच की गई। बच्चे को लेकर उसके घर की तलाश भी की गई। काफी प्रयास के बाद पुलिस बच्चे के परिजनों को खोजने में सफल रही। बच्चे को सकुशल उन्हें सौंप दिया गया।

बहन ने सीमा हैदर को पाकिस्तान भेजने की मांग की, बोली- पाकिस्तान में उसके बच्चे...; उठाया यह सवाल

नोएडा। पाकिस्तान से भारत आई सीमा हैदर की बहन रीमा का एक वीडियो सामने आया है। जिसमें वह रोते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री से मदद की गुहार लगा रही है। उसने पीएम मोदी से अपील की है कि उसकी बहन को जल्द पाकिस्तान भेजा जाए। सीमा हैदर के पाकिस्तानी पति गुलाम हैदर के यूट्यूब चैनल पर जारी किए गए एक वीडियो में एक महिला ने खुद को सीमा हैदर की बहन रीमा बताया है। वीडियो में रोते हुए उसने सीमा हैदर से अपील की है कि वह पाकिस्तान वापस आ जाए क्योंकि उसके बच्चे पाकिस्तान में ही सुरक्षित हैं। उसने पीएम से अपील की है कि सीमा हैदर को जल्द पाकिस्तान भेजा जाए। जब वीजा पर आए पाकिस्तानियों को वापस भेजा जा रहा है तो बिना वीजा के पाकिस्तान से चोरी छुपे भारत आई सीमा हैदर को क्यों नहीं भेजा जा रहा है। ग्रेटर नोएडा कोतवाली क्षेत्र में 3 मई शनिवार की शाम करीब 7 बजे एक युवक सीमा हैदर के घर में घुस गया था और उस पर हमला कर दिया था। जानकारी के अनुसार, युवक ने पहले घर के मुख्य दरवाजे पर जोर-जोर से पैर मारे और फिर अंदर घुसते ही सीमा हैदर का गला दबाने लगा था। इसी दौरान उसने सीमा को तीन-चार थप्पड़ भी मारे थे। अचानक हुई इस घटना से सीमा हैदर घबरा गई और शोर मचा दिया था।

क्रूरता देख कांप जाएंगे: कुत्ते को ई-रिक्शा के पीछे बांधकर घसीटा, करिश्माई तरीके से बची जान

ग्रेटर नोएडा । ग्रेटर नोएडा के कासना कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत डाढ़ा गांव में एक व्यक्ति ई-ऑटो से एक कुत्ते को बेरहमी से घसीटते का वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है। पुलिस ने वीडियो सामने आने के बाद उसका संज्ञान लेकर आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान नितिन निवासी डाढ़ा के रूप में हुई है। वीडियो में दिखाई दे रहा है कि आरोपी जो अपने ई-ऑटो के पीछे कुत्ते को रस्सी से बांधकर काफी दूर तक खींचता चला गया। आरोप है कुत्ते को करीब 500 मीटर तक घसीटा गया। वहां से गुजर रहे है एक व्यक्ति ने इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर साझा कर दिया। गनीमत रही कि घटना में कुत्ते की जान नहीं गई। हालांकि इस बर्बरता के खिलाफ सोशल मीडिया पर लोगों का आक्रोश दिखा। कोतवाली प्रभारी धर्मेंद्र शुक्ला का कहना है वीडियो में दिखाई दे रही अमानवीयता को देखते हुए पुलिस ने मामले का संज्ञान लिया और तत्परता दिखाते हुए आरोपी के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम समेत अन्य संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज किया। पुलिस ने आरोपी नितिन को गिरफ्तार कर लिया है। उसके खिलाफ विधिक कार्रवाई की जा रही है। आरोपी का कहना है वह कुत्ते को बांधकर ऑटो में बैठाकर ले जा रहा था। लेकिन रास्ते में वह गिर गया तो पता नहीं चल पाया।

दिल्ली विधानसभा बनेगी भारत की पहली सौर ऊर्जा से चलने वाली विधानसभा, हर महीने 15 लाख की होगी बचत

नई दिल्ली।विधानसभा ग्रीन एनर्जी की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम उठाने जा रही है। यहां 12 मई को 500 किलोवाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र की आधारशिला रखी जाएगी, जिससे विधानसभा पूरी तरह सौर ऊर्जा से चलेगी। इसके बाद दिल्ली में भारत की पहली सौर ऊर्जा से चलने वाली विधानसभा होगी। दिल्ली विधानसभा परिसर में सोमवार को सौर ऊर्जा संयंत्र की आधारशिला रखी जाएगी। एलजी वीके सक्सेना और विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता इसकी आधारशिला रखेंगे। सीएम रेखा गुप्ता भी इसमें शामिल होंगी। समारोह में उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट, पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश साहिब सिंह और ऊर्जा मंत्री आशीष सूद भी अतिथि होंगे। इस परियोजना पर किस तरह काम होना है, इस पर चर्चा के लिए विधानसभा में एक बैठक आयोजित की। इसमें बताया गया कि मौजूदा समय में विधानसभा में लगे 200 किलोवाट रूफटॉप प्रणाली को हटाकर नया सौर ऊर्जा संयंत्र लगाया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि इस काम को 45 दिन में पूरा किया जाएगा।

पाकिस्तान को भारत की सख्त चेतावनी-संघर्ष विराम तोड़ा तो देंगे तगड़ा जवाब

एजेंसी

नई दिल्ली। संघर्ष विराम का फैसला पाकिस्तान की पहल पर लिया गया है लेकिन सशस्त्र बलों का ऑपरेशन 'सिंदूर' अभी जारी रहेगा। आगे की रणनीति तय करने के लिए 12 मई को 12:00 बजे दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच वार्ता होगी। संघर्ष विराम का उल्लंघन रोकने के लिए भारत ने आज सुबह डीजीएमओ को एक और हॉटलाइन संदेश भेजा है। यदि आज रात या बाद में इन्हें दोहराया जाता है, तो हम इनका कड़ाई से जवाब देंगे। सेना प्रमुख ने पाकिस्तान के किसी भी उल्लंघन के मामले में जवाबी कार्रवाई के लिए हमारे सेना कमांडर को पूर्ण अधिकार दिए हैं। संघर्ष विराम का फैसला भले हो गया हो, लेकिन सशस्त्र बलों के 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान भारतीय सेनाओं को कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल हुई हैं। इस ऑपरेशन में 100 आतंकी ढेर किये गए हैं, जिनमें तीन बड़े

आतंकी भी हैं। एलओसी पर गोलाबारी में करीब 40 पाकिस्तानी सैनिक मार गिराए। भारतीय वायु सेना ने हमले करके पाकिस्तान के कई एयरबेस और थल सेना प्रतिष्ठान तबाह किये। भारतीय सेना की जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तानी सेना के 35 से 40 अफसरों-जवानों की मौत हुई है। पाकिस्तान के हमले में भारतीय वायु सेना के किसी एयरबेस को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है, जबकि भारतीय वायु सेना के एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तान के सभी हमले नाकाम किए। वायु सेना ने पाकिस्तान के 3 एयर डिफेंस सिस्टम बर्बाद किए और दो एयरबेस का रनवे तबाह किया है। तीनों सेनाओं के डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशन (डीजीएमओ) ने भारतीय सशस्त्र सेनाओं के %ऑपरेशन सिंदूर% की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। सेना के डीजीएमओ राजीव घई ने बताया कि पहलगाम में 22 अप्रैल को 26 निर्दोष लोगों की हत्या किये जाने के बाद आतंक के षड्यंत्रकारियों को दंडित करने और उनके आतंकी ढांचे को नष्ट करने के स्पष्ट सैन्य उद्देश्य के साथ ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया गया था। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने नियंत्रण रेखा का उल्लंघन करके नागरिक आबादी वाले गांवों और गुरुद्वारों जैसे धार्मिक स्थलों पर गोलीबारी की, जिसमें हमारे नागरिक क्षेत्रों में कई लोगों की दुखद मृत्यु हुई। डीजीएमओ घई ने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर में सेना ने पाकिस्तान और पीओके में आतंकियों और उनके ढांचे को नेस्तनाबूद करके पहलगाम आतंकी हमले का जवाब दिया है। भारतीय वायु सेना ने आतंकी शिविरों पर हमला करने में भूमिका निभाई और भारतीय नौसेना ने सटीक हथियारों के मामले में साधन उपलब्ध कराए।

हत्या के मामले में नाबालिग को पकड़ा

एजेंसी

नई दिल्ली। बाहरी जिले के रणहौला इलाके में पांच दिन से लापता ई-रिक्शा चालक की हत्या कर दी गई। उसका शव एक प्लॉट से सड़ी गली अवस्था में मिला। पुलिस ने मामले की जांच करने के बाद इस मामले में एक नाबालिग को पकड़ा है। पुलिस आरोपित से पूछताछ कर हत्या करने के कारणों के बारे में जानकारी जुटा रही है। बाहरी जिले के डीसीपी सचिन शर्मा ने बताया कि 9 मई को रणहौला थाना पुलिस को एक खाली प्लॉट में युवक के शव पड़े होने की सूचना मिली। मौके पर पहुंची पुलिस ने पाया कि शव 22 से 24 साल के युवक की है। लाश सड़ी गली अवस्था में थी। पुलिस ने तुरंत क्राइम और फोरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया। मौके से कोई चश्मदीद पुलिस को नहीं मिला। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जांच के दौरान मरने वाले युवक की पहचान रणहौला निवासी राहुल के रूप में हुई। वह पेशे से ई-रिक्शा चालक था। राहुल पांच मई से अपने घर से लापता था। परिवार वालों ने उसकी गुमशुदगी की शिकायत रणहौला थाने में की थी। शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया था और उसकी तलाश कर रही थी। शव मिलने के बाद पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज किया। पुलिस ने मामले की जांच के दौरान मृतक के परिवार वालों और उसके दोस्तों से पूछताछ की। साथ ही पुलिस ने घटनास्थल के आस पास लगे सीसीटीवी कैमरे की जांच की। फुटेज में दिख रहे संदिग्धों की जानकारी के लिए मुखबिरों को सक्रिय किया गया।

नेशनल टेक्नोलॉजी डे' पर पीएम मोदी ने कहा, 'यह पोखरण परीक्षण को याद करने का दिन'

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'नेशनल टेक्नोलॉजी डे' (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस) के अवसर पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने देश के वैज्ञानिकों के प्रति गर्व और आभार व्यक्त किया। इसके साथ ही 1998 के पोखरण परीक्षणों को याद किया। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, नेशनल टेक्नोलॉजी डे पर शुभकामनाएं। यह हमारे वैज्ञानिकों के प्रति गर्व और आभार व्यक्त करने तथा 1998 के पोखरण परीक्षणों को याद करने का दिन है। सभी हमारे राष्ट्र के विकास पथ में विशेष रूप से आत्मनिर्भरता की दिशा में हमारी खोज में एक ऐतिहासिक घटना थे।

उन्होंने आगे लिखा, हमारे लोगों द्वारा संचालित भारत प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं में एक वैश्विक लीडर के रूप में उभर रहा है, चाहे वह अंतरिक्ष हो, एआई हो, डिजिटल नवाचार हो, हरित प्रौद्योगिकी हो या और भी बहुत कुछ। हम विज्ञान और अनुसंधान के माध्यम से भावी पीढ़ियों को सशक्त बनाने की अपनी

प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं। प्रौद्योगिकी मानवता का उत्थान करे, हमारे राष्ट्र को सुरक्षित करे और भविष्य के विकास को गति दे। इससे पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने नेशनल टेक्नोलॉजी डे पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, ÷नेशनल टेक्नोलॉजी डे पर भारत उन वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और तकनीशियनों को सलाम करता है, जो हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए नई तकनीक विकसित करके योगदान देते हैं। हम अपने वैज्ञानिकों के असाधारण प्रयासों को गर्व से याद करते हैं, जिसके कारण 1998 में पोखरण में सफल परीक्षण हुए। यह भारत के इतिहास में एक निर्णायक क्षण था।

बता दें कि राजस्थान के पोखरण में हुए परमाणु परीक्षणों की याद में भारत हर साल 11 मई को नेशनल टेक्नोलॉजी डे' मनाता है। इसका उद्देश्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति करने में मदद करने वाले वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, इंजीनियरों और अन्य लोगों को सलाम करना है। पहली बार 'नेशनल टेक्नोलॉजी डे' 11 मई 1999 को मनाया गया था।

ड्रग तस्करी के मामले में दो आरोपित गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने नशे के खिलाफ चल रही मुहिम के तहत बड़ी सफलता हासिल की। पुलिस ने ओडिशा से दिल्ली लाए जा रहे गांजे की एक बड़ी खेप को जब्त किया। इसके साथ ही दो अंतरराज्यीय तस्करों को भी गिरफ्तार किया है। तस्करों के कब्जे से 365.030 किलोग्राम उच्च गुणवत्ता वाला गांजा बरामद हुआ है, जिसकी बाज़ार में कीमत लगभग एक करोड़ रुपये बताई जा रही है। यह गांजा एक ट्रक में बनाए गए गुप्त तहखाने में छिपाकर लाया जा रहा था।क्राइम ब्रांच के डीसीपी हर्ष इंदोरा ने बताया कि इंस्पेक्टर संजय कौशिक के नेतृत्व में बनी टीम ने तकनीकी निगरानी और गुप्त सूचना के आधार पर तस्करी में इस्तेमाल ट्रक की मूवमेंट को ट्रैक किया। ट्रक के रास्ते में पड़ने वाले टोल प्लाज़ा, मोबाइल लोकेशन और कॉल डिटेल की गहन जांच की गई। ट्रक को झारखंड के जमशेदपुर से दिल्ली लाते समय बीच में पेपर रोल लादे गए, ताकि गांजे की गंध और शक से बचा जा सके। डीसीपी ने आगे बताया कि 9 मई की रात को पुलिस ने ट्रक को दिल्ली के रोहिणी इलाके में काली माता मंदिर रोड के पास

घेराबंदी कर रोका। जांच के दौरान ट्रक के केबिन के पीछे एक गुप्त तहखाना पाया गया, जिसमें गांजे की बोरियां छिपाई गई थी। पुलिस ने मौके से दो लोगों को गिरफ्तार किया। जिनकी पहचान सोनीपत निवासी दीपक और सुनील के रूप में हुई।

पूछताछ में सामने आया कि दोनों आरोपितों को उनके परिचित संजेव राणा ने यह ट्रक चलाने और गांजा पहुंचाने का जिम्मा सौंपा था। ट्रक सुनील मलिक के नाम पर रजिस्टर है और उसे चिप्स की डिलीवरी के नाम पर कोलकाता भेजा गया था, जिसके बाद ओडिशा से गांजा लादा गया।

दीपक पेशे से ट्रक ड्राइवर है और पिछले 10 वर्षों से भारी वाहन चला रहा है। उसके साथ गिरफ्तार सुनील ने 12वीं तक पढ़ाई की है। वह पहली बार इस तरह की तस्करी में शामिल पाया गया है। दोनों आरोपितों ने स्वीकार किया है कि वे इस खेप को दिल्ली में किसी संपर्क सूत्र तक पहुंचाने वाले थे।

बुद्ध पूर्णिमा की राष्ट्रपति मुर्मू, उपराष्ट्रपति धनखड़ और पीएम मोदी ने देशवासियों को दी शुभकामनाएं

एजेंसी

नई दिल्ली । देश में आज बुद्ध पूर्णिमा का पर्व मनाया जा रहा है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई नेताओं ने बुद्ध पूर्णिमा की देशवासियों को बधाई दी है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने एक्स पर लिखा, बुद्ध पूर्णिमा के शुभ अवसर पर मैं सभी देशवासियों और पूरे विश्व में भगवान बुद्ध के अनुयायियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देती हूं। करुणा के प्रतीक महात्मा बुद्ध का अहिंसा, प्रेम और करुणा का अमर संदेश समस्त मानवता के कल्याण का मूल मंत्र है। उनके आदर्शों से समानता, सद्भाव और न्याय जैसे शाश्वत मूल्यों में हमारी आस्था प्रबल होती है। उनकी शिक्षाएं हम सबको नैतिक मूल्यों पर आधारित जीवन जीने के लिए प्रेरित करती हैं। आइए, हम सब महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को अपनाएं और अपने जीवन में सदाचार का अनुसरण करते हुए शांतिपूर्ण, सौहार्दपूर्ण एवं विकसित भारत के निर्माण में योगदान करें। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने बुद्ध पूर्णिमा की बधाई देते हुए एक्स पर लिखा, बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर सभी नागरिकों को हार्दिक शुभकामनाएं। यह पवित्र दिन भगवान बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण का प्रतीक है, जिनकी गहन बुद्धि चुनौतीपूर्ण समय में हमारे लिए ध्रुव तारे के रूप में कार्य करती है। भगवान बुद्ध का अहिंसा, दया और मध्यम मार्ग का संदेश आज की दुनिया में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है, व्यक्ति और समग्र मानवता दोनों के लिए। आइए हम गौतम बुद्ध द्वारा बताए गए महान सिद्धांतों के प्रति खुद को फिर से प्रतिबद्ध करें और उनकी शिक्षाओं का प्रकाश सबके लिए अधिक शांतिपूर्ण, दया माया से भरा और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करें। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर लिखा, सभी देशवासियों को बुद्ध पूर्णिमा की ढेरों शुभकामनाएं। सत्य, समानता और सद्भाव के सिद्धांत पर आधारित भगवान बुद्ध के संदेश मानवता के पथ-प्रदर्शक रहे हैं। त्याग और तप को समर्पित उनका जीवन विश्व समुदाय को सदैव करुणा और शांति के लिए प्रेरित करता रहेगा। इसके अलावा, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी बुद्ध पूर्णिमा की शुभकामनाएं दी।केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने देशवासियों को बुद्ध पूर्णिमा की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा, ÷ज्ञान, करुणा और अहिंसा के मार्ग पर चलकर मानव समाज को समानता और एकता का संदेश देने वाले भगवान बुद्ध का जीवन मनसा, वाचा और कर्मणा की त्रिवेणी है। भगवान बुद्ध से सभी के सुख और शांति की कामना करता हूं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एक्स प लिखा, बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर मैं शांति, ज्ञान और करुणा के प्रतीक महात्मा बुद्ध को नमन करता हूं। उनकी शाश्वत शिक्षाएं मानवता को सद्भाव, आत्म-साक्षात्कार और धर्म के मार्ग पर ले जाती हैं। बसपा सुप्रीमो मायावती ने एक्स पर लिखा, सत्य, अहिंसा व मानवता के आदर्श ज्योति को दुनिया में फैलाकर भारत को जगद्गुरु का सम्मान दिलाने वाले तथागत गौतम बुद्ध को आज उनकी जयंती पर शत-शत् नमन व उनके अनुयाइयों को बुद्ध पूर्णिमा की हार्दिक बधाई एवं आतंक आदि से मुक्त सुखी जीवन की शुभकामनाएं।

टेंपो की टक्कर से व्यक्ति की मौत

एजेंसी

नई दिल्ली। आजादपुर मंडी इलाके के पास एक बेकाबू टेंपो ने साइकिल सवार युवक को टक्कर मार दी। हादसे के बाद युवक को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक युवक की पहचान 36 वर्षीय दिलीप शाह के तौर पर की है। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी में भेज दिया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह घटना की है। दिलीप शाह अपने एक पड़ोसी के साथ काम पर जा रहा था। तभी टेंपो ने साइकिल को हिट कर दिया। हादसे में दिलीप को गंभीर चोट आई थीं। पुलिस ने दिलीप शाह के पड़ोसी के बयान पर केस दर्ज किया है। पुलिस आगे मामले की जांच कर रही है।पुलिस अधिकारी के मुताबिक मृतक के पड़ोसी ने अपने बयान मं बताया है कि वे सुबह पांच बजे साइकिल पर आजादपुर मंडी जाने के लिए निकले थे और जैसे ही वे सुबह साढ़े पांच लिबासपुर बस स्टैंड से आगे बढ़े,

एक टेंपो ने पीछे से साइकिल को टक्कर मार दी। हादसे में दिलीप की छाती में गंभीर चोट आई। उसे तुरंत पास के एक अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। फिलहाल पुलिस टेंपो चालक की तलाश में जुटी है।

भारत के 32 एयरपोर्ट का संचालन फिर से शुरू, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने दी जानकारी

एजेंसी

नई दिल्ली । भारत और पाकिस्तान के बीच 15 मई तक बंद भारत के 32 एयरपोर्ट्स को बंद करने का निर्णय लिया गया था। इसे लेकर अब भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) ने नया अपडेट दिया है। एएआई ने बताया कि ये सभी हवाई अड्डे तत्काल प्रभाव से नागरिक विमान संचालन के लिए उपलब्ध हैं। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने सोमवार को एक बयान में कहा, यात्रीगण कृपया ध्यान दें; 15 मई 2025 को सुबह 05:29 बजे तक 32 हवाई अड्डों पर नागरिक विमान संचालन के लिए अस्थायी बंदी की अधिसूचना जारी की गई थी। अब सूचित किया जाता है कि ये हवाई अड्डे तत्काल प्रभाव से नागरिक विमान संचालन के लिए उपलब्ध हैं।

यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी उड़ान की स्थिति सीधे एयरलाइंस से जांचें और नियमित अपडेट के लिए एयरलाइंस की वेबसाइट पर नजर रखें।10 मई को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) और संबंधित विमानन अधिकारियों ने नोटिस टू एयरमेन (नोटम) जारी कर उत्तरी और पश्चिमी भारत के 32 हवाई अड्डों को सभी नागरिक उड़ान संचालन के लिए अस्थायी रूप से बंद करने की घोषणा की थी। ये आदेश 15 मई तक प्रभावी था। जिन एयरपोर्ट को

बंद करने का फैसला किया गया था, उनमें आदमपुर, अंबाला, अमृतसर, अवंतीपोरा, बठिंडा, भुज, बीकानेर, चंडीगढ़, हलवारा, हिंडन, जैसलमेर, जम्मू, जामनगर, जोधपुर, कांडला, कांगड़ा (गग्गल), केशोद, किशनगढ़, कुल्लू मनाली (भुंतर), लेह, लुधियाना, मुंद्रा, नालिया, पठानकोट, पटियाला, पोरबंदर, राजकोट (हीरासर), सरसावा, शिमला, श्रीनगर, थोइस और उत्तरलई शामिल हैं।इससे पहले, दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट ने सोमवार को यात्रियों के लिए नई एडवाइजरी जारी की थी। इसमें कहा गया है कि दिल्ली हवाई अड्डे पर सभी कार्य सामान्य रूप से चल रहे हैं, लेकिन कुछ उड़ानों के समय में बदलाव हो सकता है। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट ने एक बयान में कहा, ÷दिल्ली हवाई अड्डे पर सभी कार्य सामान्य रूप से चल रहे हैं। हालांकि, बदलती हवाई क्षेत्र की स्थिति और नागर विमानन सुरक्षा ब्यूरो द्वारा बढ़ाए गए सुरक्षा उपायों के कारण कुछ उड़ानों के समय में बदलाव हो सकता है।

गोदामों में चोरी करने वाले चार बदमाश गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। रोहिणी जिले के कंझावला थाना पुलिस ने गोदामों में चोरी करने वाले एक गैंग का खुलासा किया है। पुलिस ने गैंग के चार बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से पुलिस ने 32 कट्टे प्लास्टिक दाना और वारदात में इस्तेमाल की गई टाटा ऐस गाड़ी बरामद की है।रोहिणी जिले के डीसीपी अमित गोयल ने बताया कि सात मई को कंझावला थाना पुलिस को इलाके एक गोदाम में चोरी होने की शिकायत मिली। जिसमें शिकायतकर्ता ने बताया कि कुछ अज्ञात बदमाश गोदाम से 32 कट्टे प्लास्टिक दाना चुराया है। थाना प्रभारी राजीव कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने मामले की जांच शुरू की। पुलिस टीम ने घटनास्थल के आसपास के कई सीसीटीवी फुटेज की जांच की। पुलिस ने कैमरे में कैद हुए बदमाशों की पहचान के लिए मुखबिरों को सक्रिय किया। पुलिस टीम वारदात में इस्तेमाल वाहन के मालिक की पहचान करने में जुट गई। वाहन के जरिए पुलिस ने किराड़ी सुलेमान नगर निवासी समरुलहक की पहचान कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में उसने अपराध में शामिल होने की बात कबूल कर ली। उसके बाद पुलिस ने किराड़ी निवासी

> पुलिस अधिकारी ने बताया कि गैंग इलाके में बंद गोदामों को अपना निशाना बनाते थे।

सौरभ, भारत नगर निवासी जितेन्द्र और कंझावला निवासी लल्लन को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में पता चला कि समरुलहक ड्राइवर का काम करता है और गाड़ी का मालिक भी है। वहीं सौरभ और लल्लन मजदूरी और जितेन्द्र सेल्समैन का काम करता है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि गैंग इलाके में बंद गोदामों को अपना निशाना बनाते थे। पुलिस इनसे पूछताछ कर गैंग में शामिल अन्य बदमाशों की पहचान करने में जुटी है।

पुलिस ने मुठभेड़ के बाद दो बदमाशों को किया गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। दक्षिण-पश्चिम जिले के आरके पुरम थाना पुलिस ने दिल्ली में सक्रिय दो कुख्यात अपराधियों को मुठभेड़ के बाद के बाद गिरफ्तार किया। गिरफ्तार किए गए बदमाशों की पहचान सैनिक एन्क्लेव मोहन गार्डन निवासी सुरेश उर्फ सुभाष (33) और जे.जे. कॉलोनी, वजीरपुर अशोक विहार निवासी मनीष उर्फ मोगली (33) के रूप में हुई है। सुरेश को पुलिस मुठभेड़ में पैर में गोली लगी। जबकि मनीष को मौके पर ही दबोच लिया गया। दोनों पर दिल्ली के विभिन्न जिलों में हत्या, हत्या के प्रयास, पुलिस पर गोलीबारी, लूट, झपटमारी,आर्म्स एक्ट सहित 50 से अधिक आपराधिक मामले दर्ज है।

दक्षिण-पश्चिम जिलेके डीसीपी सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि आर.के.पुरम थाना पुलिस को बीते कुछ समय से क्षेत्र में बढ़ती आपराधिक गतिविधियों की शिकायतें मिल रही थीं। मामले को गंभीरता से लेते हुए इंस्पेक्ट रविंदर कुमार त्यागी के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई। जिसमें इंस्पेक्टर विनय कुमार यादव, इंस्पेक्टर वीरेंद्र सिंह, एसआई अशोक कुमार, एसआई राहुल कुमार, हेड कांस्टेबल इंद्राज काजला, कांस्टेबल राकेश कुमार

आदि शामिल थे। डीसीपी के अनुसार रात 8-9 मई की दरम्यानी रात करीब 1:10 बजे पुलिस की दो पेट्रोलिंग बाइक टीमों ने आरटीआर मार्ग, सेक्टर-9 आरके पुरम के पास फुटपाथ पर दो संदिग्ध व्यक्तियों को देखा। पूछताछ की कोशिश पर दोनों बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने हवाई फायर कर आत्मसमर्पण का निर्देश दिया। उसके बाद आत्मरक्षा में पुलिस की जवाबी गोलीबारी में सुरेश को पैर में गोली लगी, जबकि मनीष को बिना घायल किए दबोच लिया गया। जांच में पता चला है कि पकड़ा गया सुरेश उर्फ सुभाष अविवाहित है। उसके माता-पिता की मृत्यु बचपन में हो गई थी। गरीबी के चलते शिक्षा पूरी नहीं कर सका और नशे की लत में पड़कर अपराध की दुनिया में चला पड़ा। वह कई बार पुलिस मुठभेड़, लूट, झपटमारी, अवैध हथियार रखने आदि के मामलों में शामिल रहा है। जबकि मनीष उर्फ मोगली विवाहित है और उसके दो बच्चे है। आरोपित ने कक्षा 5 में स्कूल छोड़ दिया था। शराब और नशे का आदी है और अपनी लत पूरी करने के लिए आपराधिक वारदात करता है। वह भारत नगर थाने का सक्रिय बदमाश है और अब तक 26 से अधिक गंभीर मामलों में शामिल रहा है। वहीं पुलिस ने आरोपितों के कब्जे से दो .32 बोर की पिस्तौल, जिनमें कुल 3 चले हुए कारतूस और 4 जिंदा कारतूस थे। इसके अलावा एक चोरी की गई होंडा सीबी हॉर्नेट बाइकव एक फर्जी नंबर प्लेट बरामद किया है।

सोलर पावर प्लांट का एलजी ने किया शिलान्यास, दिल्ली विधानसभा का विशेष सत्र अगले आदेश तक के लिए स्थगित

एजेंसी

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली की विधानसभा पहले विधानसभा बनने जा रही है। जहां 500 केवी सोलर पावर प्लांट का शिलान्यास हो गया है। वहीं दूसरी तरफ दिल्ली विधानसभा का कल बुलाया गया विशेष सत्र अगले आदेश तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने जानकारी दी है। दिल्ली विधानसभा सचिव रंजीत सिंह ने कहा कि पुराने 200 किलोवाट को उसकी पुरानी कीमत पर बेचा, नए 500 केवी सोलर पावर प्लांट से पूरी विधानसभा जगमगाएगी।ऊर्जा मंत्री आशीष सूद ने कहा कि दिल्ली में सोलर पॉलिसी 25 हजार घरों पर सोलर पैनल लगाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रति किलोवाट 10000 सब्सिडी देने का निर्णय लिया है। अगले साल 75 हजार घरों की छतों पर सौर ऊर्जा पैदा करने का लक्ष्य रखा है। पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने कहा कि दिल्ली में तीन महीने से ऊर्जा बढ़ गई है, जितने भी काम चल रहे हैं उनमें भ्रष्टाचार न हो, इसके लिए सरकार काम कर रही है। विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने नए प्रयोग किए हैं, उन्होंने विधानसभा को सोलर ऊर्जा से लैस करने की पहल की है। वह कर्मठ हैं, विधानसभा से लाल किले तक सुरंग भी है, वे जल्द ही उसको भी खुलवाएंगे। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि क्लीन दिल्ली ग्रीन दिल्ली की योजना की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। दिल्ली में बिजली की कंजंप्शन 8000 मेगावाट पहुंच गई है, ये 9000 तक पहुंचने वाली है। आज विधानसभा में 500 किलोवाट छमता का सोलर प्लांट लगेगा तो हर महीने 15 लाख रुपये बचत होगी। इसलिए हमने पीएम सूर्यघर योजना के अंतर्गत जो लोग घरों की छतों पर सोलर पैनल लगाएंगे, इसके लिए प्रोत्साहन राशि 5000 से बढ़ाकर 10000 रुपये प्रति किलोवाट छूट देने का निर्णय लिया है। आगे कहा कि दिल्ली शहर को हाईटेंशन तारों से मुक्त करने के लिए 1000 करोड़ का बजट रखा है। घरों के ऊपर से हाईटेंशन तार नहीं दिखेंगे। ईवी पॉलिसी को आगे बढ़ाते हुए पब्लिक हमने 400 ईवी बसें दिल्ली को सौंपी, जल्द ही 4000 नई ईवी बसें लेकर आ रहे हैं।

अमेरिका चीन की वस्तुओं पर टैरिफ घटाकर 30फीसदी करेगा, बीजिंग 90 दिनों तक लगाएगा 10फीसदी कर

नई दिल्ली। अमेरिका और चीन इस बात पर सहमत हुए हैं कि वे 90 दिनों की शुरुआती अवधि के लिए अपने पहले से घोषित पारस्परिक शुल्क और जवाबी शुल्क वापस ले लेंगे। इस बीच, चीन अमेरिकी वस्तुओं पर 10 प्रतिशत शुल्क लगाएगा, और अमेरिका चीनी वस्तुओं पर लगभग 30 प्रतिशत कर लगाएगा। सोमवार को एक संयुक्त बयान के अनुसार, वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए उनके द्विपक्षीय आर्थिक और व्यापार संबंधों के महत्व को पहचानते हुए अमेरिका और चीन के बीच सहमति बनी। दोनों देशों ने एक स्थायी, दीर्घकालिक और पारस्परिक रूप से लाभकारी आर्थिक और व्यापार संबंधों के महत्व को पहचाना। दोनों देशों ने अपनी हालिया चर्चाओं पर विचार किया और माना कि निरंतर चर्चाओं में उनके आर्थिक और व्यापार संबंधों में प्रत्येक पक्ष की चिंताओं को दूर करने की क्षमता है। आगे बढ़ते हुए, दोनों देश आर्थिक और व्यापार संबंधों के बारे में चर्चा जारी रखने के लिए एक तंत्र स्थापित करेंगे। इन चर्चाओं के लिए चीनी पक्ष के प्रतिनिधि स्टेट काउंसिल के वाइस प्रीमियर हे लिफेंग होंगे, और अमेरिकी पक्ष के प्रतिनिधि ट्रेजरी के सचिव स्कॉट बेसेंट और यूनाइटेड स्टेट्स ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव जैमीसन ग्रीर होंगे। दोनों देशों की ओर से एक संयुक्त बयान में कहा गया, ये चर्चाएं चीन और अमेरिका में बारी-बारी से आयोजित की जा सकती हैं, या पार्टियों की सहमति से किसी तीसरे देश में की जा सकती हैं।

जलवायु संरक्षण में भारत की भूमिका अहम, दुनिया ने माना- एशिया का लीडर

नई दिल्ली। जलवायु संरक्षण की दिशा में भारत द्वारा किए जा रहे कामों को पूरी दुनिया में मान्यता मिल रही है। एक वैश्विक मंच ने अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की प्रगति की जमकर तारीफ की है और कहा कि भारत ऊर्जा परिवर्तन के मामले में एशिया का नेता बनकर उभर रहा है। क्लाइमेट ग्रुप की सीईओ हेलेन क्लार्कसन ने सिंगापुर में आयोजित एक कार्यक्रम में कहा, 'एशिया में ऊर्जा परिवर्तन में भारत की अग्रणी भूमिका है। यह अपने जलवायु लक्ष्यों में लगातार प्रगति कर रहा है, जिसमें सौर ऊर्जा पर खासा फोकस किया जा रहा है। यह उत्साहजनक है। हेलेन क्लार्कसन ने कहा, पिछले कुछ वर्षों में देखी गई प्रगति के साथ अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में भारत की प्रगति शानदार है। उन्होंने भारत सरकार के नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) के आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि वित्त वर्ष 2025 तक भारत की कुल अक्षय ऊर्जा (आरई) क्षमता 220 गीगावाट तक पहुंच गई है। इसमें सौर ऊर्जा का सबसे बड़ा योगदान है। यह कुल नवीकरणनीय ऊर्जा क्षमता का करीब 48 प्रतिशत है।

भारत ने मालदीव को दी 50 मिलियन डॉलर की वित्तीय सहायता, विदेश मंत्री ने जताया आभार

नई दिल्ली। भारत ने 50 मिलियन डॉलर के ट्रेजरी बिल के रोलओवर के माध्यम से मालदीव को वित्तीय सहायता प्रदान की है। मालदीव के विदेश मंत्री अब्दुल्ला खलील ने ट्वीट किया, मैं 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ट्रेजरी बिल के रोलओवर के माध्यम से मालदीव को महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर और भारत सरकार के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। यह समय पर की गई सहायता मालदीव और भारत के बीच मित्रता के घनिष्ठ संबंधों को दर्शाती है और आर्थिक लचीलेपन के लिए राजकोषीय सुधारों को लागू करने के लिए सरकार के चल रहे प्रयासों का समर्थन करेगी। मालदीव में भारतीय उच्चायोग के अनुसार, भारत ने 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ट्रेजरी बिल को रोलओवर करके मालदीव को वित्तीय सहायता प्रदान की है। मालदीव सरकार के अनुरोध पर, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने मालदीव के वित्त मंत्रालय की ओर से जारी 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर के सरकारी ट्रेजरी बिल को एक और वर्ष के लिए सब्सक्राइब किया है। मार्च 2019 से, भारत सरकार एसबीआई ऐसे कई ट्रेजरी बिलों की सदस्यता की सुविधा प्रदान कर रही है और सालाना, ब्याज-मुक्त तरीके से मालदीव सरकार को रोलओवर कर रही है।

चालू वित्त वर्ष में 6.5 फीसदी की दर से बढ़ेगी अर्थव्यवस्था

नई दिल्ली। देश की अर्थव्यवस्था चालू वित्त वर्ष में 6.5 प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है। हम एक उचित आधार, मजबूत आर्थिक बुनियाद के साथ शुरुआत कर रहे हैं। अर्थव्यवस्था देशों के मुद्दों के अल्पकालिक प्रभाव से उबरने में भी सक्षम है। भारतीय उद्योग परिसंघ यानी सीआईआई के अध्यक्ष संजीव पुरी ने कहा, देश को बढ़ती व्यापार बाधाओं की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए प्रमुख व्यापारिक साझेदारों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते करने चाहिए। पुरी ने कहा, ऊर्जा, परिवहन, मेटल, केमिकल और हॉस्पिटालिटी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में निजी निवेश में वृद्धि हो रही है। देशों में मौजूदा तनाव से उपजी अनिश्चितता के कारण निवेश में कुछ कमी आ रही है। विकास और प्रतिस्पर्धा के घरेलू चालकों पर ध्यान देने की जरूरत है। पुरी ने कहा, भारत ने निर्दोष नागरिकों की हत्या करने वाले पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों को दंडित करने का सही काम किया है।

स्रीगी डीएलएफ ने आईपीओ निवेशकों को किया मालामाल, पहले दिन ही लगभग डबल हुए पैसे

एजेंसी
नई दिल्ली। कंज्यूमर ड्यूरेबल सेक्टर के लिए प्लास्टिक मोल्डिंग्स, होम अप्लायंसेज मोल्डिंग्स और एडवांस्ड इंजेक्शन मोल्डिंग्स का काम करने वाली कंपनी स्रीगी डीएलएम के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में जोरदार एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को खुश कर दिया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 99 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी एंट्री 90 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 188.10 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के तुरंत बाद खरीदारी के सपोर्ट से यह शेयर उछल कर 197.50 रुपये के अपर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। इस तरह पहले दिन के कारोबार में ही कंपनी के आईपीओ निवेशकों का पैसा लगभग डबल हो गया। स्रीगी डीएलएम का 16.98 करोड़ रुपये का आईपीओ 5 से 7 मई के बीच सब्सक्रिप्शन के

लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जोरदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 490.93 गुना सब्सक्राइब हो गया था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 136.52 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 1,534.66 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 243.71 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 17,14,800 नए शेयर जारी किए गए हैं। आईपीओ के जरिए जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी ग्रेटर नोएडा में मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी सेटअप करने, मशीनरी खरीदने और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में करेगी। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो प्रॉस्पेक्टस में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत लगातार मजबूत हुई है। वित्त वर्ष 2021-22 में कंपनी को 1.13 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था, जो अगले वित्त वर्ष 2022-23 में बढ़कर 2.81 करोड़ और 2023-24 में 3.10 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान कंपनी का राजस्व 28 प्रतिशत वार्षिक से अधिक की चक्रवृद्धि दर से बढ़ कर 54.65 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। पिछले वित्त वर्ष की बात करें तो अप्रैल से दिसंबर 2024 के बीच कंपनी को 3.77 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हो चुका था। इसी तरह इस अवधि में कंपनी 54.47 करोड़ रुपये का रेवेन्यू हासिल कर चुकी है।

भारत के खुदरा व्यापार पर कब्ज़े की कोशिशों के खिलाफ 16 मई को कैट की राष्ट्रीय संगोष्ठी

एजेंसी
नई दिल्ली। खुदरा कारोबारियों के संगठन कॉन्फ़ेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने आज कहा कि भारत के सालाना 140 लाख करोड़ रुपये के खुदरा व्यापार को विदेशी पूंजी पोषित ई-कॉमर्स और क्विक कॉमर्स कंपनियों द्वारा कब्ज़ाने की साज़िश के विरोध में कैट 16 मई को नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

कैट के महामंत्री एवं सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने बताया कि इस अहम कांफ्रेंस में देशभर से 100 से अधिक व्यापारिक नेता हिस्सा लेंगे, जिसमें पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी मुख्य वक्ता होंगी। श्री खंडेलवाल ने बताया कि इस संगोष्ठी में व्यापारियों के साथ-साथ स्वदेशी उत्पादों के समर्थक, ट्रांसपोर्ट संगठनों, एमएसएमई, महिला उद्यमियों, किसानों, स्टार्टअप्स और उपभोक्ता संगठनों सहित व्यापार जगत के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इस मंच से एक संयुक्त रणनीति बनाई जाएगी, जिसका उद्देश्य देशव्यापी जागरूकता अभियान शुरू कर इन कंपनियों के खिलाफ जनमत तैयार करना है। कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी. सी. भरतिया ने इस आयोजन को बेहद महत्वपूर्ण करार देते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि विदेशी कंपनियों की अनैतिक गतिविधियों का व्यापारी वर्ग संगठित होकर विरोध करे। उन्होंने आरोप लगाया कि इन कंपनियों ने अब तक मोबाइल, एफएमसीजी, इलेक्ट्रॉनिक्स, परिधान, किराना, होटल-रेस्तरां जैसे क्षेत्रों में भारी नुकसान पहुंचाया है और अब अन्य सेक्टरों पर भी कब्ज़े की कोशिश में जुटी हैं। श्री भरतिया ने स्पष्ट किया कि यह कांफ्रेंस एक निर्णायक पहल* होगी, जिसकी रणनीति के आधार पर पूरे देश में जागरूकता और विरोध अभियान शुरू किया जाएगा, जिससे देश के पारंपरिक खुदरा व्यापार को बचाया जा सके।

शुरुआती कारोबार में ही निवेशकों को 10.59 लाख करोड़ का फायदा, 176 शेयरों पर लगा अपर सर्किट

एजेंसी
नई दिल्ली। भारत-पाकिस्तान सीमा पर हुए सीजफायर के कारण घरेलू शेयर बाजार में आज शुरुआती कारोबार के दौरान रौनक बनी हुई है। बाजार में जबरदस्त उत्साह का माहौल बना हुआ है, जिसके कारण बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में लगभग तीन प्रतिशत तक की तेजी दर्ज की जा चुकी है?। बाजार खुलते ही आज खरीदारी का इतना जोरदार रुझान बना कि शुरुआती कुछ मिनट में ही स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 10.59 लाख करोड़ रुपये का इजाफा हो गया। शुरुआती कारोबार में निफ्टी के फार्मास्यूटिकल इंडेक्स को छोड़ कर शेष सभी सेक्टोरल इंडेक्स बढ़त के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं। फार्मास्यूटिकल इंडेक्स फिलहाल उतार-चढ़ाव के बीच सपाट स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। इसी तरह मिडकैप और स्मॉल कैप शेयरों में भी आज जोरदार खरीदारी होती हुई नजर आ रही है। बाजार की तेजी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कारोबार शुरू होने के कुछ देर बाद ही बीएसई में

लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपीटलाइजेशन बढ़ कर 427 लाख करोड़ रुपये हो गया। जबकि पिछले सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को इन कंपनियों का मार्केट केपीटलाइजेशन 416.41 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) था। इस तरह बाजार खुलते ही निवेशकों की संपत्ति में करीब 10.59 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी में शामिल शेयरों में से सन फार्मास्यूटिकल्स और इंडसइंड बैंक के शेयर गिरावट के साथ लाल निशान में कारोबार करते हुए नजर आ रहे हैं। इसके अलावा इन दोनों सूचकांक में शामिल शेष सभी शेयर बढ़त के साथ हरे निशान में बने हुए हैं। फिलहाल बीएसई पर 2,933 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हो रही है। इनमें से 2,584 शेयर मजबूती के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं, जबकि 256 शेयर गिरावट के साथ लाल निशान में बने हुए हैं।

टॉप 10 में शामिल 8 कंपनियों के मार्केट कैप में 1.60 लाख करोड़ की गिरावट, रिलायंस को सबसे ज्यादा नुकसान

एजेंसी
नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से 8 कंपनियों के मार्केट कैप में 1.60 लाख करोड़ रुपये से अधिक की कमी हो गई। इनमें सबसे अधिक नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ। दूसरी ओर, टॉप 10 में शामिल 2 कंपनियों के मार्केट कैप में करीब तीन हजार करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। इस सप्ताह के कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई), आईटीसी और बजाज फाइनेंस के मार्केट कैप में 1,60,314.48 करोड़ रुपये की गिरावट आ गई। दूसरी ओर, हिन्दुस्तान यूनिलीवर और इंफोसिस के मार्केट कैप में 2,952.89 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। 5 मई से 9 मई के बीच हुए कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 59,799.34 करोड़ रुपये घट कर 18,64,436.42 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसी तरह आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 30,185.36 करोड़ रुपये कम होकर 9,90,015.33 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसके अलावा, एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 27,062.52 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 14,46,294.43 करोड़ रुपये के स्तर पर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) का मार्केट कैप 18,429.34 करोड़ रुपये घट कर 6,95,584.89 करोड़ रुपये के स्तर पर, बजाज फाइनेंस का मार्केट कैप 13,798.85 करोड़ रुपये कम होकर 5,36,927.95 करोड़ रुपये के स्तर पर, आईटीसी का मार्केट कैप 8,321.89 करोड़ रुपये की कमी के साथ 5,29,972.97 करोड़ रुपये के स्तर पर, भारती एयरटेल का मार्केट कैप 2,138.29 करोड़ रुपये कम होकर 10,53,891.62 करोड़ रुपये के स्तर पर और टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मार्केट कैप 578.89 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 12,45,418.09 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया।दूसरी ओर, हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 2,537.56 करोड़ रुपये बढ़ कर 5,48,382.85 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह इंफोसिस का मार्केट कैप 415.33 करोड़ रुपये उछल कर 6,26,083.70 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। मार्केट कैप के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज 18,64,436.42 करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) के साथ देश की सबसे अधिक मार्केट कैप वाली कंपनी रही। इसके बाद एचडीएफसी बैंक (कुल मार्केट कैप 14,46,294.43 करोड़ रुपये), टीसीएस (कुल मार्केट कैप 12,45,418.09 करोड़ रुपये), भारती एयरटेल (कुल मार्केट कैप 10,53,891.62 करोड़ रुपये), आईसीआईसीआई बैंक (कुल मार्केट कैप 9,90,015.33 करोड़ रुपये), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (कुल मार्केट कैप 6,95,584.89 करोड़ रुपये), इंफोसिस (कुल मार्केट कैप 6,26,083.70 करोड़ रुपये), हिंदुस्तान यूनिलीवर (कुल मार्केट कैप 5,48,382.85 करोड़ रुपये) बजाज फाइनेंस (कुल मार्केट कैप 5,36,927.95 करोड़ रुपये) और आईटीसी (कुल मार्केट कैप 5,29,972.97 करोड़ रुपये) के नाम सबसे मूल्यवान टॉप 10 कंपनियों के लिस्ट में दूसरे से दसवें स्थान पर बने रहे।

1.75 करोड़ घरों को रोशन करेगा अदाणी का खावड़ा सोलर प्लांट

एजेंसी
खावड़ा। भारत के शून्य कार्बन उत्सर्जन की दिशा में तेजी से आगे बढ़ाने में महत्ती भूमिका निभा रही कंपनी अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एजीआईएल) की गुजरात के कच्छ के खावड़ा में बन रही दुनिया की सबसे बड़ी सौर परियोजना पूरी तरह से तैयार होने पर 1.75 करोड़ घरों को बिजली की आपूर्ति की जा सकेगी। यह परियोजना 538 वर्ग किलोमीटर अर्थात 132943 एकड़ में फैली है जो लगभग मुंबई के आकार के बराबर है और परेसि से पांच गुना बड़ा है। इस संयंत्र ये पौलेंड , कनाडा या स्पेन की पूरी आबादी को बिजली आपूर्ति की सकता है। कंपनी के अनुसार इस सोलर पार्क को आसमान से देखा जा सकता है। यह परियोजना 30 हजार मेगावाट क्षमता की है जिसमें 26 हजार मेगावाट सौर ऊर्जा और चार हजार मेगावाट पवन ऊर्जा शामिल है। अभी इस परियोजना में 4106.9 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। कंपनी का लक्ष्य 2030 तक 50

गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन का है और खावड़ा प्लांट की क्षमता 30 गीगावॉट है। एजीईएल ने 2029 तक करीब 1.60 लाख करोड़ रुपये के निवेश से इस परियोजना को पूरा करने वाली है। इसके पूर्ण होने में इसमें 6 करोड़ सोलर पैनल लगगें और करीब 800 पवन चक्की लगेगी। कंपनी ने नयी प्रौद्योगिकी से ऐसी पवन चक्की बनायी है जो एक पवन चक्की 5.2 मेगावाट बिजली का उत्पादन करने में सक्षम है। कंपनी ने जर्मनी के डब्ल्यू 2ई विंड टू एनर्जी के साथ मिलकर 5.2 मेगावाट की सबसे शक्तिशाली ऑनशोर विंड टर्बाइन विकसित की है, जिसमें 160 मीटर का रोटर व्यास, 20,106 मीटर का स्वीप्ट एरिया और 200 मीटर की टिप ऊंचाई है। कंपनी इस प्लांट में ऐसे सोलर पैनल लगा रही है जो दोनों ओर से बिजली उत्पादन करने में सक्षम है। इनमें से अधिकांश सोलर पैनलों ऐसे लगाये गये हैं जो धूप के साथ घुमने में सक्षम है। सोलर पैनलों की प्रतिदिन स्वचालित रोबोटिक मशीनों से सफाई की जाती है जिसमें पांनी का उपयोग नहीं किया जाता है। यह कंपनी का पूरी तरह से शून्य पानी उपयोग वाला प्लांट है और इससे 171.6 करोड़ लीटर पानी का बचत होगा। कंपनी ने हाल ही में करीब 700 मेगावाट की अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं का संचालन शुरू किया है, जिससे खावड़ा में कुल क्षमता चार हजार मेगावाट हो गई है। खावड़ा प्लांट अकेले 87.4 अरब यूनिट बिजली पैदा करेगा, जो 1.74 करोड़ घरों को बिजली आपूर्ति करने में सक्षम होगा। इससे सालाना 6.36 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन कम होगा। खावड़ा रिन्यूएबल एनर्जी पार्क अकेले भारत की कुल सोलर ऊर्जा उत्पादन का 9 फीसदी उत्पादन कर सकता है। खावड़ा परियोजना पूरी दुनिया में अपनी तरह का सबसे बड़ा पावर प्लांट है। इससे 15200 रोजगार के अवसर सृजित होंगे। मिलने का अनुमान है। कंपनी ने पूरा होने के बाद, यह सभी ऊर्जा स्रोतों में ग्रह का सबसे बड़ा बिजली संयंत्र होगा।

मूंगफली तेल, सोयाबीन रिफाइंड, पाम तेल महंगा

एजेंसी
इंदौर। सप्ताहांत खाद्य तेलों में भाव तेजी लिए रहे। मूंगफली तेल, सोयाबीन रिफाइंड तथा पाम तेल ऊंचा बिका। तिलहनों में रिफाइनरी प्लांटों की लिवाली घटी रही, इससे भाव कम हुए। मूंगफली तेल 1310 से

1320 रुपये प्रति 10 किलोग्राम खुला जो शनिवार को 1340 से 1360 रुपये पर रुका। हालांकि कारोबार के दौरान भाव ऊपर नीचे हुए। सोयाबीन रिफाइंड 1215 से 1220 रुपये पर खुलकर 1265 से 1270 रुपये बिका। पाम तेल 1280 से 1285 रुपये खुलकर 1290 से 1295 रुपये होकर थमा। तिलहन जिन्सों में मांग से भाव ऊपर नीचे हुए। पशु आहार कपास्या खली में लिवाली से मजबूती दर्ज की गई।

मनोज ज्वेलर्स ने आईपीओ निवेशकों को किया निराश, कमजोर लिस्टिंग के बाद लगा लोअर सर्किट

एजेंसी
नई दिल्ली। डायमंड और गोल्ड ज्वेलरी का कारोबार करने वाली कंपनी मनोज ज्वेलर्स के शेयरों ने आज अपने आईपीओ निवेशकों को काफी निराश किया। बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इस शेयर की आज डिस्काउंट रेट पर लिस्टिंग हुई और थोड़ी ही देर में गिर कर यह लोअर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 54 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इनकी लिस्टिंग 5 पैसे के डिस्काउंट के साथ 53.95 रुपये के स्तर पर हुई। डिस्काउंटेड लिस्टिंग के बाद निवेशकों को उसे समय और झटका लगा, जब बिकवाली के दबाव में थोड़ी ही देर में कंपनी के शेयर टूट कर 51.26 रुपये के लोअर सर्किट लेवल पर पहुंच गए। इस तरह पहले दिन के शुरुआती

कारोबार में ही कंपनी के आईपीओ निवेशकों को 5.07 प्रतिशत का नुकसान हो गया। मनोज ज्वेलर्स का 16.20 करोड़ रुपये का आईपीओ 5 से 7 मई के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से फीका रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 1.14 गुना ही सब्सक्राइब हो सका था। इनमें रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 1.01 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 30 लाख नए शेयर जारी किए गए हैं। आईपीओ के जरिए जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी अपने पुराने कर्ज को चुकाने और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में करेगी। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो प्रॉस्पेक्टस में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत लगातार मजबूत हुई है। वित्त वर्ष 2021-22 में कंपनी को 36 लाख रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था, जो अगले वित्त वर्ष 2022-23 में बढ़कर 62 लाख और 2023-24 में 3.24 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान कंपनी का राजस्व 153 प्रतिशत वार्षिक से अधिक की चक्रवृद्धि दर से बढ़ कर 43.38 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। पिछले वित्त वर्ष की बात करें तो अप्रैल से दिसंबर 2024 के बीच कंपनी को 3.77 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हो चुका था। इसी तरह इस अवधि में कंपनी 42.97 करोड़ रुपये का रेवेन्यू हासिल कर चुकी थी।

अगले सप्ताह दो नए आईपीओ की लॉन्चिंग, दो शेयरों की होगी लिस्टिंग

एजेंसी
नई दिल्ली। सोमवार 19 मई से शुरू होने वाले कारोबारी सप्ताह के दौरान प्राइमरी मार्केट में दो नए आईपीएल लॉन्च होने वाले हैं। ये दोनों आईपीओ एसएमई सेगमेंट के हैं। इनके अलावा पिछले सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन 9 मई को लॉन्च हुए एक आईपीओ में भी इस सप्ताह 14 मई यानी बुधवार तक बोली लगाई जा सकेगी। जहां तक लिस्टिंग की बात है, तो इस सप्ताह दो कंपनियां के शेयर लिस्ट होकर स्टॉक मार्केट में कारोबार की शुरुआत करेंगे। इस सप्ताह इंटेग्रिटी इंफ्राबिल्ड डेवलपर्स का 12 करोड़ रुपये का आईपीओ 13 मई को सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 15 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 100 रुपये प्रति शेयर का मूल्य तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,200 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 16 मई को किया जाएगा। वहीं इनकी लिस्टिंग 20 मई को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी। इसी तरह 14 मई यानी बुधवार को एक्रेशन फार्मास्यूटिकल्स का 29.75 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 16 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 96 से 101 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,200 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 19 मई को किया जाएगा। वहीं इनकी लिस्टिंग 21 मई को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी।इन दोनों नए आईपीओ के अलावा पिछले सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन 9 मई को सब्सक्रिप्शन के लिए खुले वर्चुअल गैलेक्सी इन्फोटेक के 93.29 करोड़ रुपये के आईपीओ में बुधवार 14 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 135 से 142 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,000 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 15 मई को किया जाएगा। वहीं, इनकी लिस्टिंग 19 मई को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी। इस आईपीओ को अभी तक 69 प्रतिशत सब्सक्रिप्शन मिल चुका है सोमवार से शुरू हो रहे कारोबारी सप्ताह के दौरान दो कंपनियां लिस्टिंग के जरिए स्टॉक मार्केट में अपने कारोबार की शुरुआत करने जा रही हैं। इनमें एक कंपनी श्रीगी डीएलएम लिमिटेड है।

विदेशी मुद्रा भंडार 2.07 अरब डॉलर घटकर 686.06 अरब डॉलर पर

एजेंसी
मुंबई। स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में कमी होने से 02 मई को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 2.07 अरब

डॉलर घटकर 686.06 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं, इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 1.98 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 688.13 अरब डॉलर पर रहा था।रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 02 मई को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 51.4 करोड़ डॉलर की मजबूती के साथ 581.2 अरब डॉलर पर पहुंच गई। वहीं, इस अवधि में स्वर्ण भंडार 2.5 अरब डॉलर की भारी कमी आई और यह घटकर उछलकर 81.8 अरब डॉलर रह गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह एसडीआर तीन करोड़ डॉलर की गिरावट लेकर 18.6 अरब डॉलर पर आ गया। इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि में 30 लाख डॉलर की कमी आई और यह पिछले सप्ताह के मुकाबले घटकर 4.5 अरब डॉलर रह गई।

सर्राफा बाजार में बड़ी गिरावट, 1,800 रुपये तक सस्ता हुआ सोना

एजेंसी
नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज जबरदस्त गिरावट दर्ज की गई है। आज के कारोबार में सोना 1,650 रुपये से लेकर 1,800 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो गया है। इसी तरह चांदी के भाव में 1,100 रुपये प्रति किलोग्राम की कमजोरी दर्ज की गई है। कीमत में आई गिरावट के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में आज 24 कैरेट सोना 96,880 रुपये से लेकर 97,030 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 88,800 रुपये से लेकर 88,950 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में भी आज गिरावट आने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 97,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना 97,030 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 88,950 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 96,880 रुपये

प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 88,800 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 96,930 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 88,850 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 96,880 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 88,800 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 96,880 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 88,800 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 97,030 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 88,950 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 96,930 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 88,850 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 97,030 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 88,950 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना सस्ता हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 96,880 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 88,800 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

पाकिस्तानी यूजर ने पति को छोड़ने की दी सलाह, तो

देवोलीना भट्टाचार्जी

ने उड़ाई धज्जियां, कहा- 2 दिन में तेरी आर्मी भीख मांगने पे आ गई...

देवोलीना भट्टाचार्जी टेलीविजन इंडस्ट्री का जाना माना नाम हैं और अक्सर सोशल मीडिया पर एक्टिव रहती हैं. हाल ही में उन्होंने भारत-पाकिस्तान में तनाव के मामले को लेकर कई सारे पोस्ट शेयर किए हैं. एक्ट्रेस ने इंडियन आर्मी के सपोर्ट के लिए कई सारे ट्वीट किए हैं. हालांकि इन्हीं सब के बीच देवोलीना का एक पाकिस्तानी फैन सामने आया है, जिसने सोशल मीडिया पर एक्ट्रेस को उनके पति को छोड़ने की सलाह दी है. इस पर एक्ट्रेस ने उसे करारा जवाब दिया है.जब से पहलगाम में आतंकी अटैक हुआ है, तभी से कई सारे स्टार्स ने पाकिस्तान और आतंकवादियों के विरोध में पोस्ट शेयर की है. इन्हीं में से एक नाम देवोलीना का भी है. हालांकि, इसी दौरान ज्यादातर स्टार्स को पाकिस्तानी

फैंस की तरफ से निगेटिव कमेंट मिल रहे हैं, जो कि लाजमी हैं. हाल ही में एक पाकिस्तानी यूजर न देवोलीना के पोस्ट पर कमेंट करते हुए उन्हें उनके पति को छोड़ने के लिए कहा गया है.

'अपने पति को छोड़ दें'

दरअसल, पाकिस्तानी यूजर ने लिखा कि मैं भारत के सभी प्रोड्यूसर्स से ये रिक्वेस्ट करता हूं कि प्लीज देवोलीना को कुछ काम दे दें, ये घर बैठकर पागल हो गई है. देवोलीना हर वक्त लोगों के बीच नफरत फैला रही है और मुझे इसका फैन होने का अफसोस है. यह गंदी, गंदगी फैलाने वाली और बेवकूफ है. साथ ही अगर ये इस्लाम से इतनी नफरत है, तो अपने पति को छोड़ दे, घटिया. बता दें कि देवोलीना ने शाहनवाज शेख से शादी रचाई है.

एक्ट्रेस ने दिया करारा जवाब

पाकिस्तानी यूजर के इस कमेंट पर एक्ट्रेस ने उसे मुंहतोड़ जवाब दिया है. उन्होंने लिखा है कि अब इनको मेरे काम की फिक्र है, जिनका खुद का कोई भरोसा नहीं है. अरे जाकर अपना देश और आतंकी कैंप संभाल. 2 दिन में तेरी आर्मी इंटरनेशनल फंड्स से भीख मांगने पे आ गई है. मेरे पति की फिक्र में अपना खून मत जला इतना, जो आतंकवादी पाल रखे हैं अपने देश में उनको भारत सरकार के हवाले कर दे, बेचारे परेशान हो गए हैं मुझसे.

कितनी अमीर हैं 'तेरे नाम' की निर्जला, 22 साल बाद अब कहां हैं और क्या कर रही हैं भूमिका चावला?

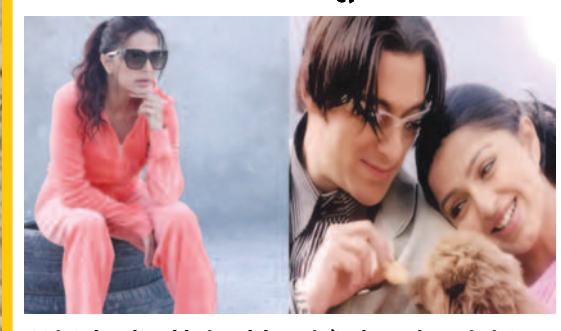

हिंदी सिनेमा में कई ऐसी एक्ट्रेसेस रही हैं, जो अपनी पहली ही फिल्म के जरिए ही दर्शकों का दिल जीतने में कामयाब हो गईं. एक्ट्रेस भूमिका चावला भी इसी लिस्ट में शामिल है. शायद आप समझ नहीं पाए होंगे कि भूमिका चावला आखिर कौन हैं. तो आपको बता देते हैं कि भूमिका ने ही 22 साल पहले 2003 में सलमान खान की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'तेरे नाम' में निर्जला का किरदार निभाया था.निर्जला का किरदार निभाकर भूमिका चावला काफी पॉपुलर हो गई थीं. तेरे नाम उनकी बॉलीवुड में डेब्यू फिल्म थी और सलमान के साथ ब्लॉकबस्टर फिल्म देकर वो रातोंरात स्टार बन गई थीं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि अब भूमिका चावला कहां हैं और वो क्या कर रही हैं ? अगर नहीं तो चलिए हम आपको बताते हैं.

तेलुगु फिल्म 'युवाकुडू' से किया एक्टिंग डेब्यू

भूमिका का जन्म 21 अगस्त 1978 को नई दिल्ली में हुआ था. भूमिका ने अपने फिल्मी करियर का आगाज साउथ सिनेमा से किया. उनके करियर की पहली फिल्म 'युवाकुडू' थी. ये तेलुगु पिक्चर साल 2000 में रिलीज हुई थी. भूमिका ने साउथ की कई फिल्मों में काम किया है और अच्छा खासा नाम कमाया.

अब क्या कर रही हैं भूमिका चावला ?

भूमिका ने साउथ की कई फिल्मों में काम किया जबकि बॉलीवुड में वो तेरे नाम के अलावा 'रन', 'सिलसिले', 'गांधी माई फादर', 'दिल जो भी कहे' और 'दिल ने जिसे अपना कहा' जैसी फिल्मों में भी नजर आईं. भूमिका ने साल 2007 में भारत ठाकुर से शादी कर ली थी. इसके बाद वो एक्टिंग से दूरी बनाने लगी. वहीं जल्द ही एक्ट्रेस फिल्मी दुनिया के लिए एक गुमनाम चेहरा बन गईं. हालांकि सालों बाद उन्होंने एक्टिंग कमबैक किया. बॉलीवुड में फिर उन्हें सलमान खान की फिल्म 'किसी का भाई किसी की जान' के अलावा कंगना रनौत की फिल्म 'इमरजेंसी' में भी देखा गया.

इतने करोड़ की मालकिन हैं भूमिका

फिल्मी दुनिया में कदम रखने से पहले भूमिका ने 1998 के शो 'हिप हिप हुर्रे' में काम किया था. उन्होंने हिंदी, तमिल, तेलुगु और मलयालम भाषा की 50 से ज्यादा फिल्में की हैं. एक्ट्रेस की नेटवर्थ की बात करें तो रिपोर्ट्स के अनुसार वो करीब 15 करोड़ रुपये की संपत्ति की मालकिन हैं.

भारत की सबसे रईस एक्ट्रेस, जिनकी फिल्में नहीं देखते उन्हीं के बच्चे, 100 से ज्यादा पिक्चर्स में किया काम

कई बॉलीवुड एक्ट्रेसेस ने 80 के दशक में खूब नाम कमाया. ऐसी ही एक अदाकारा के बारे में हम आपको बताने जा रहे हैं, जो अब भारत की सबसे अमीर एक्ट्रेस हैं. उन्होंने कई शानदार फिल्में दी हैं. हालांकि फिर भी आपको ये जानकर हैरानी होगी कि उनके बच्चे उनकी फिल्में नहीं देखते हैं.यहां बात हो रही है जानी-मानी एक्ट्रेस जूही चावला की. जूही चावला ने अपने करियर का आगाज 80 के दशक में किया था. अपने लंबे और सफल करियर में उन्होंने कई शानदार फिल्में दी थीं. अब चाहे वो फिल्मों से दूर हैं, लेकिन वो भारत की सबसे अमीर एक्ट्रेस हैं. आइए आपको जूही की नेटवर्थ बताते हैं.

'सल्तनत' से किया था बॉलीवुड डेब्यू

57 वर्षीय जूही चावला का जन्म हरियाणा के अंबाला में 13 नवंबर 1967 को हुआ था. जूही ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत साल 1986 में आई फिल्म 'सल्तनत' से की थी, लेकिन उन्हें पहली बड़ी और खास पहचान साल 1988 की फिल्म 'कयामत से कयामत तक' से मिली थी. आमिर खान ने इस फिल्म के जरिए बॉलीवुड में डेब्यू किया था. दोनों की ये पिक्चर ब्लॉकबस्टर हुई थी.

जूही ने अपने करियर में 'कयामत से कयामत तक' के बाद 'डर', 'दीवाना मस्ताना', 'भूतनाथ', 'इश्क', 'यस बॉस', 'हम हैं राही प्यार के', 'राजू बन गया जेंटलमैन', 'बोल राधा बोल' और 'स्वर्ग' जैसी बेहतरीन फिल्मों सहित कुल 100 से ज्यादा फिल्मों में काम किया है. एक्ट्रेस के अलावा जूही ने बतौर प्रोड्यूसर भी काम किया. वो 'अशोका, 'फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी' और 'चलते चलते' जैसी फिल्मों की प्रोड्यूसर रह चुकी हैं.

जूही की फिल्में नहीं देखते उनके बच्चे

जूही बॉलीवुड की कामयाब एक्ट्रेस हैं. दर्शक उनकी फिल्में बड़े चाव के साथ देखते हैं. हालांकि उनके बेटे अर्जुन मेहता को उनकी फिल्मों में दिलचस्पी नहीं है. जूही ने खुद इसके पीछे की वजह बताई थी. एक बार जूही के बेटे अर्जुन ने उनसे ये कहा था कि उन्हें वो फिल्में पसंद नहीं हैं, जिनमें वो रोमांटिक रोल करती हैं.

4600 करोड़ है जूही की नेटवर्थ

हुरुन रिच लिस्ट 2024 की रिपोर्ट के मुताबिक जूही चावला की टोटल संपत्ति 4600 करोड़ रुपये है और वो भारत की सबसे अमीर एक्ट्रेस हैं. 850 करोड़ की नेटवर्थ के साथ इस लिस्ट में ऐश्वर्या राय बच्चन दूसरे नंबर पर मौजूद हैं.

भारत-पाक में तनातनी के बीच भोजपुरी एक्ट्रेस

अक्षरा सिंह

ने इस कदम से जीत लिया दिल

भारत और पाकिस्तान के बीच कई दिनों तक गरमा गरमी के बाद अब सीजफायर का ऐलान हो गया है. हालांकि बीते कुछ दिनों में बने युद्ध जैसे हालात का असर एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री पर भी पड़ा. बॉलीवुड फिल्मों की थिएटर्स रिलीज रोक दी गई और कई कलाकारों ने अपने इवेंट्स भी पोस्टपोन कर दिए. भोजपुरी सिनेमा में एकलौती ऐसी एक्ट्रेस हैं, जिन्होंने ऐसा एक फैसला लिया है. जी हां, हम बात अक्षरा सिंह की कर रहे हैं जो दोनों देशों में तनातनी से बेहद दुखी हैं.अक्षरा सिंह के पिछले कुछ पोस्ट में आप देख सकते हैं कि वो पहलगम में हुए आतंकी हमले से दुखी थीं इसके बाद ऑपरेशन सिंदूर के बारे में लिखते हुए भारतीय सेना की तारीफ भी की. लेकिन एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट पोस्ट में बताया है कि उन्होंने एक बड़ा फैसला लिया है.

अक्षरा सिंह ने लिया है बड़ा फैसला

अक्षरा सिंह ने एक पोस्ट इंस्टाग्राम पर शेयर किया था. इसके कैप्शन में उन्होंने लिखा, 'जब तक सबकुछ ठीक नहीं हो जाता कोई पोस्ट, कोई गाना रिलीज नहीं होगा.' इसमें हैशटैग भी अक्षरा सिंह ही लिखा गया और हाथ जोड़ने वाली इमोजी भी बनाई गई.

इस पोस्ट में लिखा था, 'इस कठिन समय में मैं अक्षरा सिंह देश के साथ एकजुटता से खड़ी हूं. हे ईश्वर, हमारे देश भारत को आशीर्वाद दें और प्रगति, शांति और समृद्धि प्रदान करें. देश के जवानों की रक्षा करें, हमारे लोगों को सुरक्षित रखें. एकता और प्रेम में रहने की सद्बुद्धि प्रदान करें.'

अक्षरा सिंह के इस पोस्ट को उनके फैंस और फॉलोवर्स काफी पसंद कर रहे हैं. ज्यादातर फैन ने कमेंट बॉक्स में हार्ट इमोजी और जय हिंद लिखा है. वहीं एक ने लिखा, 'बहुत सही फैसला.' वहीं किसी दूसरे ने लिखा, 'भोजपुरी सिनेमा की शेरनी हैं आप, जय हिंद, जय भारत.' फैंस अक्षरा सिंह के इस कदम से काफी खुश हैं.

अक्षरा सिंह के पिछले पोस्ट में क्या था ?

दो दिन पहले अक्षरा सिंह ने एक पोस्ट शेयर किया था, जिसमें लिखा था चलो हमारी बहादुर सेना के लिए प्रार्थना करते हैं, साथ बना रहे. प्रार्थना जाप, जय हिंद, जय भारत. वहीं 'ऑपरेशन सिंदूर' की भी अक्षरा ने एक पोस्ट के जरिए तारीफ की थी. अक्षरा सिंह पिछला गाना पांच दिन पहले रिलीज हुआ था, जिसका नाम 'खेला होबे' था. ये गाना प्रिया मलिक ने गाया था और ये गाना अक्षरा सिंह पर फिल्माया गया था. यूट्यूब पर इस गाने को खूब पसंद किया जा रहा है.